ॐ

# ज्ञानप्रकाश

अर्थात्-

## मारवाड़ी समाज की कुरीतियों का

## फोटो



श्रीलाल अग्रवाल,

बी. ए. एलएल. बी. वकील,

अजमेर

॥ ॐ ॥

# "ज्ञानप्रकाश"

अर्थात्—

सुधारकसभा अजमेर का खेला हुआ एक
शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक—
मारवाड़ी समाज की कुरीतियों का

## फोटो


श्रीलाल अग्रवाल,
बी. ए. एलएल. बी., वकील
अजमेर.



बाबू मथुराप्रसाद शिवहरे के प्रबन्ध से
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर में मुद्रित.

सं० १९७६ विक्रमीय. दिसम्बर सन् १९१९.

प्रथमवार, 
१००० 

मूल्य,
।।) आने.

# भूमिका.

**प्रिय बंधुओ !**

इस बात को प्रायः सब ही देश के नेता मानते हैं कि जाति-सुधार सब सुधारों से अति आवश्यक है। अतएव यह एक छोटी-सी जातिसुधार की पुस्तक सेवा में अर्पण की जाती है और आशा है कि आप इसको स्वीकार करेंगे।

इस पुस्तक में प्रायः विद्वान् पुरुषों के विचार एकत्रित किये गये हैं और आवश्यकतानुसार गायन भी दिये हैं।

यदि वैश्यजाति में, जिसके सुधार का इस पुस्तक का विशेष अभिप्राय है, इस पुस्तक द्वारा एक भी कुरीति कम हो जायगी तो लेखक अपने उद्योग को सफल हुआ समझेगा और आयंदा फिर सेवा करने का साहस करेगा।

अजमेर,<br>
ता० २१ दिसम्बर १९१९.

आपका—<br>
श्रीलाल अग्रवाल,

नोट—"सुधारक" सभा अजमेर ने तारीख १५ नवम्बर सन् १९१९ को इस नाटक को खेला और अजमेर की वैश्यजाति ने इसको पसंद किया।

ॐ

# ज्ञानप्रकाश ॥

## प्रथम अङ्क, दृश्य १.

( स्थान अजमेर, लाला ज्ञानचन्द की बैठक )

## ज्ञानचंद.

### ❀ निवेदन ❀

विनती सुनो हमारी ध्यान देके भाइयो,
खोटी बिसारियो जो हो अच्छी तो मानियो ।
विद्या को कामधेनु कवि ने कहा सुनो,
बल, विद्या के प्रचार में प्यारे लगाइयो ॥
बल बुद्धि नाशकारी यह व्यभिचार का जनक,
फिर ऐसे बाल-व्याह की क्यों है तुम्हें सनक ।
मत्थे लिखाय किसलिये शादी की धूमधाम,
बरबाद घरको करते हो अच्छा नहीं है काम ॥

भाई तुम्हारे हैं दुखी रोटी व तार से,
करते फ़िज़ूलख़र्ची हो तुम बे विचार से।
लज्जा को छोड़ हाड़ व दारू की प्यारी है,
रंडी नहीं-चुड़ैल हैं, पैनी कटारी है ॥
मंगल के काम में अहो ! क्या काम रांड का,
जहाँ पै शुभगान चाहिये वहाँ स्वांग भांड का।
बट्टा लगेगा सट्टे के धन्धे में बिल-ज़रूर,
इज़्ज़त अगर अज़ीज़ है सट्टे से रहो दूर ॥
कुल लाज व कुल धर्म से जो तुमको प्यार है,
"किङ्कर" पढ़ाओ पुत्रियाँ ये ही पुकार है ॥

( *चिन्ता करते हुए टहलते हैं* ).

हा भारत ! यह तेरी क्या दुर्दशा होगई ? हा ! जिस देश को कभी संसार का गुरु मानते थे। जो बल, विद्या, पराक्रम और द्रव्य में परिपूर्ण था, लोग बहुत खुशहाल थे, संसार भर में मालामाल थे, अब उसकी यह क्या दशा होगई ? अब न वह बल है न वह विद्या न वह पुरुषार्थ और न वह लक्ष्मी। सब शुभगुणों का अभाव होगया। जिस पर प्यारी वैश्य जाति ! तेरी दशा तो दिन दिन बिगड़ती ही जाती है। तेरे में-विद्या का अभाव, वेहद फ़िज़ूलख़र्ची की रस्में, परस्पर की फूट, अनमेल विवाह, धार्म्मिक शिक्षा की शून्यता, पञ्चायतें बेनियम, अनाथ बालक और विधवा स्त्रियों के उदरपोषण का अप्रबंध, एक क्या अनेक कुरीतियां प्रचलित होगई हैं। हा !—

हालत हमारी देखकर, आकाश ने भी रो दिया।
हा! हुई क्या यह दशा, सनमान सब कुछ खो दिया॥
कैसा हमारा तेज बल था, कैसा था रमणीय कुल।
अज्ञान जैसे तिमिर छाया, भाग्य ही बस सो गया॥
मान, विद्या, बल, पराक्रम, हममें अब किंचित नहीं।
मनमानी रस्में जारी की हैं, छोड़ मारग सत्य का॥

( प्रवेश चातुरीदास )

चातुरी०—लालाजी! सेठ शोभारामजी पधारे हैं, आप से मिलना चाहते हैं।

ज्ञान०—अच्छा अन्दर भेजो।

शोभा०—जयगोपालजी की लाला ज्ञानचन्दजी।

ज्ञान०—जयगोपालजी की सेठ शोभारामजी! पधारिये, पधारिये, कहिये आज कैसे परिश्रम किया?

शोभा०—अजी परिश्रम काई, आपसे एक मामला में राय लेबा आयो हूं।

ज्ञान०—मैं किस योग्य हूं, कहियें ऐसा क्या मामला है?

शोभा०—आप किण योग्य नहीं, आप सब कुछ करबा योग्य छो। मामलो ओ है कि आपणे बाई रूपवती की सगाई करणी है, पूरी चिन्ता लाग रही है। देखो कह्यो है कि—

देणो भलो न बाप को, बेटी भली न एक।
चलणो भलो न कोस को, जो विधि राखै टेक॥

ज्ञान०—रूपवती की उमर क्या है ? अगर सगाई करने योग्य हो गई हो तो कर दो।

शोभा०—रूपवती की उमर अब कोई दश बरस की हो गई है। काई करां, मैं तो क्यूंहीं पढ्या लिख्या कोनी, म्हां का घर का गुरु पण्डित मिथ्यानन्दजी केवे है कि दश बरस से कन्या की उमर ज्यादा होजाय और कदास उणा को व्याह नहीं करे तो उणारा मा बाप नरक में पड़े, सो ओ काम जल्दी करणो है, इण में आप की काई राय है ?

ज्ञान०—ओ हो ! मैं समझ गया। बाहरी "शीघ्रबोध" खूब ! और तो और तूने भी अपना सिक्का खूब ही जमाया। शायद वह इस श्लोक का प्रमाण देते होंगे:—

अष्टवर्षा भवेद् गौरी, नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत् कन्या, अत ऊर्ध्वं रजस्वला॥
माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च।
त्रयस्ते नर्कं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्॥

ठीक, परन्तु सेठ साहब ! यह तो विचारिये कि यह श्लोक किस शास्त्र का है; कब बना, किस अभिप्राय से बनाया गया, किसने बनाया और अब इसकी क्या आवश्यकता है ?

शोभा०—लाला साहब, आतो म्हें काई जाणां ? ओ कीं शास्त्र को है, कब बण्यो और कुण बणायो, परन्तु गुरु मिथ्यानन्दजी तो ओ श्लोक पढ़ २ कर बहुत ताकीद करे है और कहवे है कि कन्या ने बड़ी कर व्याह करवा वालो नरक में जासी।

ज्ञान०—भाईसाहब, भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है कि मुसलमान बादशाहों के समय में हिन्दुओं की कुंवारी लड़कियों को मुसलमान ज़बरदस्ती छीन लिया करते थे और बड़ा अत्याचार करते थे, इसलिये हमारे देशहितैषी पंडितों ने देश और काल को विचार कर यह श्लोक बनाया और चूंकि विवाहिता कन्याओं को वे छीन नहीं सकते थे या छीनना उचित नहीं समझते थे तथा वे बाहर निकलने से भी रुकजाती थीं इसलिये यह श्लोक बड़ा हितकारी जान उस समय के लिये बनाया कि जिससे बड़ा मतलब निकला। परन्तु अब अङ्गरेज़ सरकार के न्यायशील राज्य में, जब कि राजा और रंक सब कानून से बन्धे हुए हैं, ऐसे अत्याचार नहीं हो सकते। इसलिये इस श्लोक को मानना अब आवश्यक नहीं। आप जानते हैं समय हर घड़ी बदलता है और समय के साथ साथ हमारी रीति भांति का बदलना भी आवश्यक है। हां, कोई समय था जब यह सब बातें बेवस माननी पड़ती थीं, अब नहीं। देखो, संसार में वही मनुष्य फलीभूत होता है जो देश और काल को विचार कर कार्य्य करे।

शोभा०—लालासाहब, आ तो कही सो ठीक है, परन्तु रूपवती अब बहुत बड़ी होगई है, पछे चोखो लड़को मिलणो मुश्किल है आप जाणो हो—

"ज्यों ज्यों भीजे कामली, त्यों त्यों भारी होय"।

ज्ञान०—नहीं नहीं, यह विचार ठीक नहीं है, अभी तो रूपवती केवल दश ही वर्ष की है, कम से कम १५ वर्ष की

तो होने दो। देखो, बाल्यावस्था में विवाह करना बड़ी भारी भूल है। न तो लड़की पति को जाने न लड़का पत्नी को। विवाह करना कोई हंसी खेल नहीं है। लड़के लड़कियों के लिये जन्मभर के सुख या दुःख का सामान एकत्र करना है। इस बालविवाह की कुरीति ने भारत को ग़ारत कर दिया है। इससे बल, वीर्य, बुद्धि, सब का नाश होकर आयु क्षीण हो जाती है और कई प्रकार के रोग लग कर मनुष्य पुरुषार्थहीन हो जाता है और वह सांसारिक कार्य्य करने योग्य नहीं रहता। देखो, फरंगिस्तान के मनुष्यों की औसत उमर ४४ वर्ष की है परन्तु ऐसी ही कुरीतियों के कारण भारतवासियों की औसत उमर केवल २२ वर्ष की रहगई है। केवल इसी बालविवाह की कुरीति के कारण आज एक बंगाल प्रांत में अस्सी हज़ार विधवा स्त्रियें अपने पुरदर्द नारों से आकाश को फाड़ रही हैं और एक वर्ष से लेकर पन्द्रह वर्ष तक की भारतवर्ष की दो करोड़ विधवायें इन पण्डितों को दुराशीश दे रही हैं।

**क्यों करते हो मित्रो बच्चों का विवाह।**

**नहिं पुरुष नारि को जाने, नहिं पत्नी पति पहिंचाने।**
**पती का अर्थ है क्या॥ क्यों कर०॥ १॥**

**चली बालविवाह की रीती, भारत में हुई कुरीती।**
**विद्या दई गमा॥ क्यों कर०॥ २॥**

**जब पुरुष भला मरजावे, बस नाम पती धरजावे।**
**सूरत मिले कहां॥ क्यों कर०॥ ३॥**

विधवा सर धुन पछितावें, औ बहुत ही रुदन मचावें।
पति जाने हो क्या ॥ क्यों कर० ॥ ४ ॥
मत बालविवाह कराओ, क्यों इनकी उमर घटाओ।
'ज्ञान' रहा समझाय ॥ क्यों करते० ॥ ५ ॥

शोभा०–आ तो आप ठीक फरमाई, परन्तु जो रीति परम्परा सूं चली आ रही है उणाने क्यान छोड़णी आवै ?

ज्ञान०–नहीं नहीं, यह रीति परम्परा की कहां से आई, प्राचीन शास्त्रों को तो जाने दो आप केवल रामायण ही को देखो। उसके पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि लड़कियां युवा होकर अपना वर आप चुनती थीं, जिसका प्रमाण माता सीताजी का "स्वयंवर" है। फिर देखिये, रुक्मणीजी ने महाराज कृष्ण से, द्रोपदीजी ने अर्जुन से और दमयन्ती ने राजा नल से युवावस्था में पहुंच कर विवाह किये और अब भी राजपूतों में कन्या का विवाह बड़ी उमर में करते हैं। जिन कौमों में आजकल स्वयंवर की रीति प्रचलित है वे संसार में और कौमों की अपेक्षा अधिक दीर्घायु, उत्साही, बलिष्ठ और विद्वान् हैं। ज़रा फरंगिस्तान के इस रिवाज पर विचार तो करो। बड़ी उमर में विवाह करने से लड़का लड़की एक दूसरे के गुण और स्वभाव को भलीभांति पहिचान सकते हैं जिससे परस्पर प्रेम बढ़ाकर जन्म पर्यन्त सुख भोगते है। बाल्यावस्था में विवाह करने से निर्बल, सुस्त और रोगी संतति उत्पन्न होती है, जो बचपन ही में आधे से अधिक नष्ट हो जाती है और जो कन्यायें छोटी उमर में मातायें बन जाती

हैं उनके शरीर को बड़ी भारी हानि पहुंचती है अर्थात् वे समय से पहिले निर्बल और वृद्ध होजाती हैं। बालविवाह विद्याध्ययन को हानि पहुंचाने और मानसिक शक्ति घटाने का मूलकारण है। इसके अतिरिक्त बचपन में लड़के लड़की का विवाह करना न्यायविरुद्ध है, क्योंकि बच्चों के भी कुछ अधिकार होते हैं जिनको कोई माता पिता उनसे छीन नहीं सकते। उनकी इच्छा के विरुद्ध उनको तमाम उमर के लिये किसी वादे का पाबन्द बना देना सर्वथा अन्याय है।

सच तो यह है कि हिन्दू जाति के नीचे गिर जाने का मुख्य कारण बालविवाह ही है, डाक्टर पीज़ी, फिलियसन कहते हैं—"सैकड़ों वर्षों से आप लोग बच्चों के बच्चे होते चले आये हैं, तो गुलामों के गुलाम बनने का इससे बढ़कर विश्वास-योग्य और क्या कारण हो सकता है?"।

शोभा०—( आप ही आप ) यह लोग तो आपकी समझ के आगे दूसरां की कुछ चलबा ही कोनी देवे। ( प्रकट ) तो काई बालविवाह पहिली कोनी होतो हो ?

ज्ञान०—कदापि नहीं। बालविवाह और पर्दा, यह दोनों तो केवल मुसलमान बादशाहों के राज्य के पौधे हैं, हमारे महर्षियों ने कदापि ऐसी आज्ञा नहीं दी। भला टुक विचार कीजिये, जिन महात्माओं ने स्वयंवर जैसे सुनियम नियत किये वे ऐसी हानिकारक कुरीति को क्यों प्रचलित करने लगे थे ?

शोभा०—तो काई अब आ रीति मिटसकै है ?

ज्ञान०-क्यों नहीं, अब भी भारतभूमि विद्वान् विचारशील महापुरुषों से सर्वथा शून्य नहीं होगई है। मिट अवश्य जावेगी। अलबत्ता कुछ समय की आवश्यकता है। थोड़े ही दिन हुए महाराज गायकवाड़ ने, जिनके राज्य की बड़े बड़े राजनीतिज्ञ प्रशंसा करते हैं, एक प्रबल नियम बनाकर इस घातक कुरीति को अपने राज्य से जड़ से उखाड़ डाला है। और कई जातिसभाओं ने प्रस्ताव कर लिया है कि बालविवाह को रोकने का अतिशय उद्योग किया जाय। इतना ही नहीं, बल्कि हमारी न्यायशीला सरकार ने भी १२ वर्ष पहिले गर्भाधान होने को जुर्म क़रार दिया है। इस के मिट जाने में क्या शक है।

शोभा०-( आपही आप ) इसी अक़ल तो कई खुंज्या में लिया फिरूं हूं ( प्रगट ) आछो तो हुकम हो। फेर कदेई आस्यूं।

ज्ञान०-पधारेंगे ? मेरी राय तो यह है कि अभी आप सगाई न करें, आगे आपकी समझ है।

शोभा०-हा ठीक है, समझ तो आपही को काम आवसी। ( जाता है )

ज्ञानचंद-देखो इस मनुष्य की बुद्धि कैसी मारी गई है। इतना समझाया, परन्तु इस के एक बात ध्यान में नहीं आई। सच है—"विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"।

वास्तव में कुरीतियों का पेड़ वैश्य कौम की क़ौम ही में भारी जड़ पकड़ गया है इसके उखाड़ने में बड़े उद्योग, साहस और

समय की आवश्यकता है। जिस तरह बाज़ीगर अपनी लकड़ी फेर कर जमूरे के होश हवास गुम कर देता है, ठीक उसी तरह अभी वैश्य जाति पर मिथ्यानन्द जैसे "अर्धदग्ध" पंडितों ने अपनी लकड़ी फेर रक्खी है। होश में आने में अभी बड़ी देरी लगेगी। जिस पर मारवाड़ी जाति की तो विचित्र लीला है। यदि मारवाड़ी लोग रोज़गारी न होते तो इन को कोई एक कौड़ी को न पूछता। इनमें यदि कोई गुण है तो केवल यह ही है कि रोज़गार करके कमा खाते हैं और कुछ धन भी एकत्र करलेते हैं वरना और कोई गुण इन में नहीं है। मूर्खता अर्थात् विद्याहीनता में मथुरा के चौबों के सिवाय कोई जाति भारतवर्ष में इनके समान नहीं है। बोलने चालने, उठने बैठने की इन में पूरी तमीज़ नहीं है। असभ्यता इन में इतनी है कि हज़ारों आदमी सरे बाज़ार अपनी जाति की बहू बेटियों को छेड़ कर प्रसन्न होते हैं, कोई इनको रोकने वाला नहीं। आपस में दश मारवाड़ी एकत्र होते हैं तो गालियों के बिना बात नहीं करते। अपने बड़ों के गुण भी यह लोग खो बैठे हैं। कहां तो इनको हिन्दू राजाओं ने श्रेष्ठ ( सेठ ) और मुसलमान बादशाहों ने शाह ( साह ) की पदवियां दी थीं और कहां अब यह बड़ी घृणा से "बनियें" कहलाते हैं। सारांश यह है कि चारों ओर से मारवाड़ी समाज की नाव भंवर में फँसी हुई है। अब देखें किस तरह ईश्वर निकाले।

गाना ॥

आहे ! कैसी गर्दिश ने हमको सताया ॥
बड़ी मुशकिल में जान, रहा कुछ भी न ध्यान ।
आहे ! कुछ बनता नहीं है बनाया ॥ आहे ! कैसी० ॥
दया में धर्म में भी हैं नहीं कि नहीं परोपकारों में ।
बिगाड़ा धर्म है अपना रहे फिर फितनागारों में ॥
ख्वाबे ग़फलत में पड़े गहरी नींद सोते हैं ।
बुद्धी और धर्म को, हाथों से अपने खोते हैं ॥
बिगड़ी भारत की दशा, चढ़ा अविद्या का नशा ।
कैसी विपत्ति में फंसा, आलस आन धसा ॥
संभालो धर्म को अपने, तजो ग़फ़लत को तुम भाई ।
करी है अर्ज़ यह गंधर्व, तजो आलस्य निठुराई ॥
आहे अबतो सूर्य उदय हो आया ।
आहे ! कैसी गर्दिश ने हमको सताया ॥

( जाते हैं )

## प्रथम अङ्क, दृश्य २.

### भङ्ग का अखाड़ा ।

*( जमनादास, गंगाधर और कुँवर फसादीलाल भंग पीने को बैठे हैं )*

( छज्जू का प्रवेश )

छज्जू—जुजमान की जय बनी रहे, कँवर साहब की सदा जय बनी रहे, जमना मैया कृष्ण कन्हैया ।

सब—आइये, आइये, चौबेजी पधारिये ।

गंगाधर०—चौबेजी, जमना मैया और पिता कौन ?

छ०—पिता हमारे छः । एक तो जो हमें अन्न दे—कंवर फसादीलाल, दूसरो हमें जो भय से बचावे-पुलिस, तीसरो सुसुर तू, चौथो नाना निहालचन्द, पांचवों गुरु हरनाथ जो मर गयो और छठो बाप बूंटी ।

गंगा०—चौबेजी आप ने पिताओं का तो तार लगा दिया, माता ?

छ०—माता ? लै गिन, एक माता, दूसरी सास, तीसरी लुगाई...

जमना०—अरे क्या बकै है, क्या नशा बिना किये ही पागल हो गया ?

छ०—अरे सुनतो ले, चौथी रंडी, पांचवीं वैरागन और छठी भंगन ।

गंगा०–इत्तेरो बुरो होय, यह सब तेरी मा होंगी।

छ०–अबे लुगाई सब की मा ऐसे कि बेटा हो जाय है सो पिता को ही अंश होय है। रंडी मा ऐसे कि उनके घर सब के पिता जाते हैं और भंगन ऐसे कि सब का मलमूत्र झाड़े है।

गंगा०–तो बता इनमें से तेरी मा कौनसी है?

छ०–मेरी मा! मेरी मा तेरी बहिन के भैया की चाची की जिठानी के बेटा की बहू। ( सब हंसते हैं )

गंगा०–चौबेजी, शहर की क्या खबरें हैं?

छ०–खूब भंग घुट रही है और लड्डू उड़ रहे हैं। मारवाड़ियों में ब्याह पर ब्याह हो रहे हैं, ब्राह्मणों की चांदी है।

सब–हां!

छ०–तुम्हें ख़बर नहीं, आज ही ब्रह्मभोज है, ख़ूब लड्डू उड़ेंगे।

फसा०–चौबेजी आप कितने लड्डू खाओगे?

छ०–हम, यही पंदरे सेर बहुत, इतने तो हम मथुरावालों के मामूली हैं।

गंगा०–और मोचीपत्र?

छ०–(मुंह बिगाड़ कर) मोचीपत्र तू खा सुसुर, गंवार।

गंगा०–तू गंवार बीस वक्त हमसे कहले हम बुरा थोड़ा ही मानें हैं।

छ०–अरे भाई गंगाधर, कल तो भंग की तरंग में बड़ी दूर की सैर की।

गंगा०-चौबेजी, कहां की ?

छ०-पहिले तो ब्रह्मांड फोड़, मकान की छत तोड़, हवा के रथ पर सवार हुए, कुछ दूर तक छोटे छोटे पत्तियों की चहचाहट सुनी फिर आगे चले तो चील कौवे गिद्ध मिले। हज़ारों भूत, प्रेत, चुड़ैल, चंडाल, जिन, शहीद, डाकिनी, शाकिनी नंगे धड़ंगे मुर्दों की खोपरियां चबाते, गाते, बजाते, हल्ला मचाते दिखाई दिये, जिनको देखकर मुख ज़र्द और शिर में दर्द होने लगा। मर्द की क्या ताप जो ठहर सके। वहां से जो मैंने नीचे की ओर निगाह की तो हिमालय पहाड़ एक मिट्टी के ढेर सा मालूम हुआ और समुद्र सफ़ेद कपड़े की चादर सा चमकने लगा। मिश्र की मीनार और चीन की दीवार, गुड़ियों के घर सी दिखलाई दीं। लण्डन, पेकिन, कलकत्ता बड़े बड़े शहर दो चार झोंपड़े से मालूम पड़ते थे। वहां से ऊपर को जो उठे तो इन्द्र की मेघमाला, धर्मराज के तार के खंभे और स्वर्ग की रेल मिली। आगे बढ़ते ही सब सिद्ध लोग दिखलाई दिये। पतितपावन भागीरथी का प्रवाह मिला जिसमें सैकड़ों धर्म के जहाज बेड़ा पार होते जाते थे और गंगाजी की अररर धारा सात समुद्र फोड़ कर पाताल की खबर लाती थी जिसमें सब देवताओं के दर्शन हुए जो हरिकथा सुनने के लिये शेषजी के पास जा रहे थे। वाह ! वाह ! कैसे रसिया श्रोता हैं, ब्रह्मलोक से चौदह लोक डाक कर कथा सुनने के लिये पाताललोक में शेषजी के पास जाते हैं। गंगाजी को प्रणाम कर आगे बढ़े तो भीमसेन के फेंके हुए हज़ारों हाथी हवा के रथ में जुते हुए आकाश की परिक्रमा

करते हुए दिखाई दिये। वहां से आगे चले तो स्वर्ग की निसैनी देखी जिसको अर्जुन ने बाणों से पाटी थी। भाई वाह! क्या ही सैर की। तरंग जो उड़ी तो पीछे इस मृत्य-लोक में पड़े मिले।

गंगा०—हां गुरु!

नशा करे तो ऐसा ही करे और होवे अँधा धुंध।
घर के जाने मर गया पर मन में बड़ा आनन्द॥

छ०—अरे छोरा भांग घुटी कि नहीं चार कभी के बज गये।

छोरा—गुरू भांग तय्यार है रंग लगाओ।

छ०—( भांग का लोटा लेकर ) रंग है दाऊदयाल, हर-देव, बलदेव, केशवदेव चौथो भाई गांछिनदेव।

तीन लोक को माखन खाय, कीड़ा कांटा देय बहाय।
चढ़ते ध्यान उतरते ज्ञान, आकल बाकल करे तो कृष्ण बलदेव की आन।

साधुन खाई सन्तन खाई, खाई कंवर कन्हैया।
जो विजिया की निंदा करे, उसे खाय कालिका मैया॥

लेना दाऊदयाल, लो भाई पीओ ( सब पीते हैं )

ज०—लोभाई दम भी लगालो फिर एक दो डाव लगे ( सब गांजा पीते हैं और नशा आजाता है )

गंगा०—अहा! अरे यार जमनादास, कहो यार इस वक़्त गांजे का भाव कैसा है?

ज०—क्या कहें भाई पारसाल जैसे मज़े में दम लगाते थे वैसा इस साल छुटकर दम नहीं लगता इस साल तो ऐसा

महंगा हो गया है कि एक मकान गिरवी रखना पड़ा है। क्या कहें गुरू, बिना दम के खाली भंग से मौज नहीं आती। अगर दुनिया में कोई चीज़ है तो बस एक गांजा है। सच कहता हूं ईश्वर जाने अगर पूरे तौर से दम लगे तो भीम की भी नाक काट डालूं, आस्मान के तारों को अपने घोड़े बनाय डालूं और जो कहीं दूध और मिठाई मिल जाय तो उसी वक्त बिल्ली के मामूं की मूँछ उखाड़ डालूं। आज कल के छोकड़ों के जैसा मैं दम नहीं लगाता हूं। खांसने के वक्त अगर कुत्ते भी चौंकें तो उन्हें भी जान से मार डालूं। ( नातना झाड़ता है )

छ०–( जमनादास की नाड़ पर हाथ रखकर ) वाह वे गुसाईं के पाले, जमनाजी के नाले, गुजराती ताले, झाड़नों तो अच्छो आवै है।

ज०–हैं, हैं, अबे झाड़े तो भंगी है।

छ०–तू भी तो भंगियों का जमादार और बम्पुलिस का दरोगा है, हट दूर खड़ा हो।

ज०–अबे रांडके हम बम्पुलिस के दरोगा, तो तू पुलिस का दरोगा, हथकड़ी डाल कर हवालात में भेज दिया जायगा।

*( पुलिस के जमादार और सिपाही का प्रवेश )*

सब–अरे, यह क्या !

जमादार–( गुस्से से ) तुम लोग अभी क्या वाही तवाही बक रहे थे ?

छ०–जमादार साहब, कुछ नहीं, आपस में हम यों हीं दिल्लगी कर रहे थे।

ज०—झूंठ बोलता है, झक मारता है, अभी तो कोई कह रहा था पुलिस के दरोगा के हथकड़ी डाल कर हवालात में भेज दो।

छ०—अजी हम आपस ही में कह रहे थे, आप से किसी ने कुछ नहीं कहा।

ज०—( घुड़की देकर ) आप आप करता है, बदमाश, चलो थाने में यहां अखाड़ा बना रक्खा है। बदमाशो! कुछ काम न काज दिन भर दंगा फ़साद लड़ाई झगड़ा। आवारा-गर्दी में तुम्हारा चालान किया जायगा। धर्म ही धर्म की ओट में चोर उचक्कों को भी मात कर दिया।

सब—चालान, चालान ? हमारा चालान ?

ज०—हां ! हां ! तुम्हारा और तुम्हारी सब मंडली का, बहुत सिर उठाया है, चलो चलो। (सब आहिस्ते २ निकलते जाते हैं )

ज०—उल्लूबेग, पकड़ो इन बदमाशों को, भाग न जायं। दफ़ै ५५ ज़ाबूता फौजदारी में इनका चालान किया जायगा।

छ०—(पांच उंगली उठाकर) जमादार, देखो पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती हैं, हमसे न करना हम गँजेड़ी भँगेड़ी हैं।

ज०—( दस उंगली उठाकर ) छज्जूभइया ! हमने तुम को पहिले भी दस दफ़े इस तरह सेठों के लड़कों को बिगाड़ने से मना किया है। अगर नहीं मानोगे तो बड़े घर की सैर करवाई जावेगी।

छ०—कँवरसाहब लाओ, अच्छा भाई यह लो। (देकर जाते हैं )

## प्रथम अङ्क, दृश्य ३.

( प्रवेश ज्ञानचंद और विद्यावती )

ज्ञान०—विद्यावती, आज तू पाठशाला से जल्दी कैसे [चली] आई ?

विद्या०—पिताजी आज हमारी वार्षिक परीक्षा थी, पाठशाला के बड़े अधिष्ठाता पधारे थे, परीक्षा होने पर हमको छुट्टी हो गई।

ज्ञान०—विद्या, यह तो बतला आजकल तू क्या पढ़ती है ?

विद्या०—पिताजी आज खगोल विद्या पर पंडितानीजी ने पाठ पढ़ाया था, जिसमें उन्होंने बतलाया कि पृथ्वी, जिस पर हम निवास करते हैं, नारंगी के सदृश गोल है। परन्तु [ब]ड़ी होने के कारण चपटी दिखाई देती है और यह तारे [च]न्द्रमा सूरज इत्यादि सब हमारी जैसी ही पृथ्वियां हैं और [स]म्भव है कि इन में से कइयों में हमारे जैसे ही मनुष्य भी [नि]वास करते हों। एक एक तारा एक दूसरे से करोड़ों कोश [दूर] है और इस ब्रह्मांड में हमारे सूरज जैसे सहस्रों और [सू]रज हैं। एक क्या कई अद्भुत बातें बतलाईं। फिर पृथ्वी का [घू]मना, दिन रात का होना, ऋतु का बदलना, चन्द्रमा की [क]लाओं का घटना बढ़ना सब सविस्तर वर्णन किया।

ज्ञान०—हां ! विद्या, तू तो अभी बालक है क्या यह सब [बातें] तू समझ गई ?

विद्या०—हां ! पिताजी समझना क्या कठिन है । हमारी पुत्रीपाठशाला में बड़े २ यंत्र समझाने को रक्खे हुए हैं जिन से यह बातें शीघ्र ही समझ में आजाती हैं ।

ज्ञान०—हां ! यह तो तूने बड़ी अद्भुत बातें बतलाई और भी कोई बात आज तुम्हारे पाठ में आई ?

विद्या०—हां पिताजी, एक बात तो कहना मैं भूल ही गई । वह यह है कि बहुतसी कन्याओं ने पंडितानीजी से प्रश्न किया कि ग्रहण कैसे होता है ।

ज्ञान०—उन्होंने क्या बतलाया ?

विद्या०—वह कहने लगीं कि पृथ्वी और चन्द्रमा सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, जब चन्द्रमा घूमते घूमते पृथ्वी और सूर्य के बीच में आजाता है और सूर्य की किरणों को पृथ्वी पर गिरने से रोकलेता है तो सूर्यग्रहण हो जाता है और इसी तरह जब पृथ्वी सूर्य और चन्द्रमा के बीच में आजाती है और सूर्य की किरणें, जिससे चन्द्रमा प्रकाश पाता है, चन्द्रमा पर गिरने से रुक जाती हैं तो चन्द्रग्रहण हो जाता है । सूर्यग्रहण सदा अमावस और चन्द्रग्रहण पूर्णिमा को होता है । सूर्य, चद्रमा और पृथ्वी की गति का ठीक हिसाब लगाने से हम सौ बरस पहिले ग्रहण जान सक्ते हैं । इतना ही नहीं किन्तु यंत्रों द्वारा साबित भी कर दिखलाया ।

ज्ञान०—हां ! क्या तुम्हें कोई श्लोक, भजन इत्यादि भी सिखाये जाते हैं ?

विद्या-हां पिताजी सुनिये:—

*माता शत्रू पिता वैरी, येन बालो न पाठिता ।*
न शोभते सभामध्ये, हंसमद्धे वको यथा ॥
रूपयोवनसम्पन्ना, विशालकुलसम्भवा ।
विद्याहीना न शोभंते, निर्गंधा इव किंशुका ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च, नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥
यावन्न साक्षरा माता, तावतद् बालबालिका ।
निरक्षराहि तिष्ठान्ति, विनोपाये सहस्रकैः ॥

## ( १ ) गायन ।

उठो जागो, उठो जागो, उठो भारत की प्रिय नारी ।
अविद्या नींद में पड़ कर, करी धन-धर्म की ख्वारी ॥
उदित हो सूर्य विद्या का, मिटे अन्धकार तब सारा ।
पढ़ो चित्त देके तुम विद्या, गहो शिक्षा मेरी प्यारी ॥
तुम्हारे मूढ़ होने से, हुई सन्तान अज्ञानी ।
अगर तुम अब भी पढ़लोगी, तो संतति हो निगम प्यारी॥
पड़ी गफलत में तुम बहिनो! हुआ भारत यह सब गारत ।
मुसलमां और ईसाई, बने लाखों शिखाधारी ॥
यही विनती है विद्या की, कहूं कर जोड़ कर सब से ।
सुधारो अब गिरी हालत, बने जो बात फिर सारी ॥

## ( २ ) गायन ।

उठो बहिनो पढ़ो विद्या, यही शिक्षा हमारी है ।
बिना विद्या के पढ़ने के, बुरी हालत तुम्हारी है ॥
तुम्हारा नाम शूद्रों में, हुआ शामिल है ऐ बहिनो !
बनी हो पैर की जूती, वही जो मूर्खा नारी है ॥
तुम्हारा मान और इज्जत, नहीं अब कुछ रहा बाकी ।
सबब इसका यही है री, अविद्या तुमको प्यारी है ॥
तुम्हीं को कहते थे लक्ष्मी, तुम्हारा ही नाम था देवी ।
तुम्हारे ही मूर्ख होने से, हुआ भारत दुखारी है ॥
यही है विद्या की विनती, न जब तक तुम पढ़ो विद्या ।
तभी तक यह बुरी हालत, हमारी और तुम्हारी है ॥

( *प्रवेश लाला धर्मचन्द* )

धर्म०—जय गोपालजी की लाला ज्ञानचन्दजी ।

ज्ञान०—जय गोपालजी की मित्र धर्मचन्दजी, पधारिये, पधारिये, आज क्योंकर परिश्रम किया ?

धर्म०—वैसे ही आप के दर्शन करने चला आया था । बहुत दिनों से आप से मिलने की उत्कंठा लग रही थी । आज अवसर मिला ।

ज्ञान०—बड़ी अनुग्रह की ।

धर्म०—आज तो बाई विद्यावती की पढ़ाई, श्लोक और भजन सुनकर चित्त बड़ा ही प्रसन्न हुआ । मैंने सब बातें खड़े खड़े पोली में सुनीं ।

ज्ञान०—तो कहिये मित्र अब आपको मालूम हुआ, लड़कियां क्या नहीं पढ़ सकतीं, केवल उनको अवसर दिया जाना चाहिये।

धर्म०—हां पढ़ तो सब कुछ ही सकती हैं परन्तु स्त्रियों को पढ़ाने में विशेष लाभ थोड़ा ही है।

ज्ञान०—क्यों! लाभ क्यों नहीं? यह तो आज आपने एक नई बात कही। नहीं, नहीं, देखो स्त्रियों के पढ़ाने से बड़े २ लाभ हैं। प्रथम तो उन के पति कुकर्मों से बच जाते हैं; क्योंकि सुशिक्षित स्त्रियां अपने पति का शिष्टाचार आदर और मान करके उनका मन सदैव प्रसन्न रखती हैं और उन को कुकर्मों की ओर झुकने नहीं देतीं। दूसरे उनकी सन्तान भी सभ्य और विद्वान् होती है। तीसरे वे अपने घर का प्रबन्ध भलीभांति कर सकती हैं, शरीर को सदा आरोग्य रख सकती हैं, पतिव्रतधर्म सदैव निभाती हैं। उनके उठने बैठने और बोल चाल को देख कर दूसरी स्त्रियां उनका बड़ा आदर और सत्कार करती हैं। कुनबे वाले सदा प्रसन्न रह कर उनकी प्रशंसा करते हैं। पति का दिनों दिन प्रेम और आनन्द अधिक होता जाता है। फिर सब से नम्रता और शुद्धचित्त से यथायोग्य वर्ताव करती हैं, गृहस्थ को सुप्रबन्ध से चलाती हैं और सदा अपने जीवनमूल स्वामी को निष्कपट प्रेम व उत्तम ढंग से आनन्दित करती हैं। समय विचार और रुचि पहिचान कर कार्य्य करती हैं और सदा उचित और मधुर वाणी मुख से निकालती हैं। यह क्या कम लाभ हैं?

धर्म०—यह तो सब अच्छी बाते हैं, परन्तु बहुधा देखने में आया है कि पढ़ने लिखने वाली स्त्री शीघ्र विधवा होजाती

है या दुराचार करती है या पति की आज्ञा मानने की ठौर उस पर हुक्म चलाती है। कहीं ऐसा भी कहते हैं कि स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार नहीं है।

ज्ञान०—नहीं मित्र, ये सब सर्वथा मिथ्या विचार हैं। भारतवर्ष में स्त्रीशिक्षा की इस प्रकार न्यूनता होने पर भी सहस्रों स्त्रियां पढ़ी लिखी हैं और अखंड सुहाग भोग रही हैं। यदि पढ़ी लिखी स्त्रियें विधवा हो जाती हैं तो क्या अनपढ़ स्त्रियां विधवा नहीं होतीं? फिर पढ़ने में यह दोष क्योंकर लग सकता है। रही हुक्म चलाने की सो तो यह बात है कि सुशिक्षित स्त्री अपने दरजे और धर्म को भलीभांति पहिचान कर कदापि ऐसा नहीं करेगी। इसके अतिरिक्त सुशिक्षित स्त्री किसी से बैर, डाह, लड़ाई, झगड़ा नहीं रखती, सब विपत्तियों को सुगमता से सहती है और वृथा लज्जा, हठ और अभिमान की बातें सब छोड़ देती है। रही अधिकार की सो यह बात है कि विद्या पढ़ने का अधिकार सब को है। क्योंकि विद्या किसी एक पुरुष की जायदाद नहीं है। इस में सब का बराबर हक हासिल है।

धर्म०—देखो फरंगिस्तान में स्त्रीशिक्षा का प्रचार अधिक होने से किस प्रकार दुराचार बढ़ गया है। स्त्रियां न्यायालयों में अपने पति पर निडर होकर नालिश करती हैं, तलाक़ मंज़ूर करवाती हैं, सरकारी अधिकार मांगती हैं, फिर ऐसी शिक्षा से क्या लाभ।

ज्ञान०—इस में कोई सन्देह नहीं कि फरंगिस्तान में कुछ स्त्रियों की यह दशा है परन्तु यह सब धार्मिक शिक्षा न होने

के कारण है। यदि गीता, रामायण इत्यादि उत्तम उत्तम धर्म की पुस्तकें पढ़ाकर उनके सत् उपदेशों को याद करवावे तो ये बातें भारतवर्ष में कदापि नहीं हो सकतीं। हे मित्र! मेरी सम्मति तो यह है कि यदि आप भारतवर्ष को इस गिरी हुई दशा से उठाना चाहते हो, अपनी सन्तान को सुशिक्षित करने की इच्छा रखते हो, गृहस्थाश्रम का आनन्द वास्तव में प्राप्त करना है और यदि अपने जाति, समाज और मातृभूमि के सच्चे कल्याण की अभिलाषा रखते हो तो स्त्रियों को अवश्य ही पढ़ाओ विना स्त्रीशिक्षा के कदापि कल्याण नहीं हो सकता। किसी ने कहा है—

मित्रो कैसे हो कल्याण, जब तक पुत्री नहीं पढ़ाओ।
॥ टेर ॥

ईश्वर ने दिया अधिकार बराबर सबको।
अग्नी जल वायु अहार बराबर सबको॥
ऋतु सर्दी गर्मी अहार बराबर सबको।
फिर ऐसे ही विद्याभण्डार बराबर सबको॥
जितने भी नर और नारी, सब विद्या के अधिकारी।
जब प्रभु है न्यायकारी, तो सबके ही हितकारी॥
पर तुमने किया अन्याय, शूद्र बतलाय, शोक है हाय।
बनाया इनको पशू समान॥ जब तक० ॥

गाड़ी के तुल्य सब ने यह गृहस्थ बताया।
स्त्री पुरुषों को दोनों धुरे ठहराया॥

बस दोनों धुरों को जिसने सम बनवाया ।
इस गृहस्थरूप गाड़ी को उसने चलाया ॥
जहां स्त्रियां आदर पावें वे गृहस्थ स्वर्ग बनजावें ।
सतविद्या पढ़ें पढ़ावें सब सुख साधन वहां पावें ॥
हों धुरे बराबर जहां, सुक्ख हो तहां, दिया है वहां ।
शास्त्र मनु वेदों का परमाण ॥ जब तक० ॥

हां एक समय वह था यहां भारत नारी ।
थीं पढ़ी लिखी गुणवान पण्डिता सारी ॥
देखो उपनिषद् उठाकर ज़रा विचारी ।
सुलभा आदी ने शास्त्र अर्थ किये भारी ॥

छन्द ॥

दमयन्ती सीता गार्गी लीलावती विद्याधरी ।
विद्योत्तमा मंदालसा थीं शास्त्रशिक्षा से भरी ॥
कैसी विदुषी स्त्री भारत की भूषण हो गईं ।
धर्मव्रत छोड़ा नहीं गो जान अपनी खो गईं ॥
इस कारण देश हमारा, था उन्नति करनेहारा ।
सब विद्या का भण्डारा, गुरु कह कर सब ने पुकारा ॥
वही आर्य्यवर्त अब देश, भोगरहा क्लेश, ध[illegible]
क्योंकि नहीं स्त्रियों का सन्मान ॥ जब तक० ॥

यदि माता पढ़ी होती तो हमें पढ़ाती ।
बचपन से हमें विद्या भूषण पहनाती ॥

ले गर्भाधान में सब संस्कार कराती ।
यज्ञोपवीत कर शाला में भिजवाती ॥
यह मातृमान कहलावें, शिक्षित सन्तान बनावें ।
जो गुण माता में पावें, वही पुत्र पुत्री में आवें ॥
जो माता हो विद्वान्, सिखावे ज्ञान, करो तो ध्यान ।
तभी होवे उत्तम सन्तान ॥ जब तक० ॥

जो बीड़ा देशसुधार का मित्रो ! उठाओ ।
स्त्रीशिक्षा का पहिले यत्न कराओ ॥
यह रक्खो याद जब तक नहीं पुत्री पढ़ाओ ।
तो देवासुर संग्राम घरों में पाओ ॥
बिन स्त्रीशिक्षा भाई, नहीं किसी ने उन्नति पाई ।
कहे ज्ञानचन्द समझाई, सृष्टीकर्म रहा बताई ॥
यही विनय करूं कर जोड़, कीजिये गौर, पुत्रियों की ओर ।
बढ़ाओ इनका मान ॥ जब तक० ॥

धर्म०—बात तो सत्य है, बिना स्त्रीशिक्षा के किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं हो सकती है ।

प्रथम अङ्क समाप्त ॥

## द्वितीय अङ्क, दृश्य १.

( प्रवेश मिथ्यानन्द )

मिथ्यानन्द–हां ! हां ! हां ! हम ब्राह्मण हैं । हम द्विज-कुलतिलक हैं । हम भूदेव हैं। भगवान् ने हमारी ही लात खाई थी । बृहस्पतिजी हमारे ही चचा थे । भारतवर्ष एक दिन हमारी ही जिह्वा से शासित होता था, सबके गुरु हमही थे । व्यास, वशिष्ठादि ऋषि, कालीदासादि कवि, जगदीशादि नैयायिक, बालशास्त्री से याज्ञिक, पातञ्जलि से व्याकरणज्ञाता, मथुराप्रसाद मिश्र से अंगरेज़ी वेत्ता और बापूदेव शास्त्री से ज्योतिषी हमारे ही पूर्वपुरुष थे ।

महाराजाधिराज नल, युधिष्ठिर, विक्रम, भोज आदि ने हमारा ही चरणामृत पान किया था । करोड़ों रुपयों की जागीरें इन्हीं गुणों से हमें मिली थीं । क्या हुआ यदि अब वह ब्रह्मतेज नष्ट होने से हमारा स्वरूप वैसा नहीं रहा । (मुंह पर हाथ फेर कर) यह खुदा का नूर, यह साबुन से धुली हुई रील का जनेऊ, यह ललाट बिना तिलक, यह काला अंगरेज़ी बूट और यह निरक्षर मुंहः—

हम हीं वशिष्ठ शिष्ट भारद्वाज वंश के हैं,
हम हीं अथर्व सामवेद के पढ़ैया हैं ।
हम हीं विवेक विद्या ज्ञान की कहावें खान,
हम हीं राजसूय अश्वमेध के करैया हैं ॥

परन्तु अब वह पानी मुलतान गये, अपनी करनी पार उतरनी। अब उन बातों को न कोई गिरवी रक्खे और न कोई खरीदे। सब धंधे को छोड़ हम लोगों ने भिक्षा मांगने को अपना पेशा बनाया, परन्तु उस में भी दिन भर डोई २ करने पर भी पूरा पेटभर खाने को नहीं मिलता। थोड़ा बहुत पत्रा पढ़ना भी सीखा परन्तु अब वह भी अकारथ है इस में अब क्या रक्खा है अब तो केवल बड़े बड़े विद्वानों की पूछ है। हमारे जैसों को तो कोई धंधा करना उचित है।

प्रातसमग उठ, संध्या नियम व्रत छोड़,
भिक्षा का लोटा उठाते हैं।
औषधि बनाते ग्रह शांति सुनाते,
बात बात ही में ठगों को मात कर जाते हैं।
दूसरे के द्वार पर दिखाते नेम व्रत दान,
परन्तु जब जात घर यह सब भूल जाते हैं।
दाम ही के नाते मिथ्यानन्द जो दिखाते नेह,
पण्डित सभा में हम ही कहलाते हैं॥

आज तो सवेरे से ही बैठे हुए हैं, किसी ने आकर यह भी नहीं पूछा कि पंडितजी भूखे हो कि धाये। केवल एक मारवाड़ी समाज हम जैसे अधपढ़ पण्डितों की कुछ पूछ करती है, परन्तु अब उसमें भी लोग पढ़ कर होशियार होने लगे, यह लोग भी अब पंजे से निकलते दीखते हैं। क्या करें? कहां जावें? कोई हुनर ही सीखते तो खरच तो चलता, पेट भराई तो होती, परन्तुः—

अब पछिताये होय क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत।

चलो बस्ती में चलें कुछ पेट का उद्यम करें। ओ हो, परन्तु सेठ शोभारामजी तो इधर ही आते दिखते हैं।

शोभा०-पंडितजी महाराज, पावांधोक देवूं हूं।

मिथ्या०-जय रहो जुजमान ! दिन दिन वृद्धि हो, सदा कल्याण हो, शंकर आप जैसी धर्ममूर्ति को चिर आयु करे, आप गऊ ब्राह्मणों के दास हो, पधारो, पधारो। आज क्यान पधारया ?

शोभा०-अजी लाला ज्ञानचंदजी सें आपणै बाई रूपवती की सगाई का बारा में सलाह ली ही सो वह तो आपका श्लोक ने ही मानना की जरूरत नहीं बतावै और कह्यो कि छोटी उमर में लड़का लड़की को व्याह ही नहीं करणो चाहिजे।

मिथ्या०-सेठसाहब, ज्ञानचंदजी तो थोड़ा दिनां सें आर्य्या पंथ में होगया है। आज कल सब ही पढ्या लिख्या लोगां की मत बिगड़ गई है। वे तो सनातन की सब ही बातां ने झूंठी बतावै है। भला आप विचार तो करो, जो रीतां परम्परा सूं चली आरही हैं चाहे वे चोखी हों या खोटी, अब उणां ने क्यान छोड़णी आवै।

शोभा०-पंडितजी ! कोई कोई बात तो वे सांची भी कहवे है।

मिथ्या०-अजी कांई धूल सांची कहवे है, कांई आपणा बडेरा आपां से ही मूरख हा सो उणां की रीतां ने आपां खोटी कह सकां हां ? ( आप ही आप ) इस आर्य्यसमाज ने

तो हमारे रोजगार पर लात मारदी, सब भांडा फोड़ डाला, सब लोग जागृत हो गये, रहे सहे मारवाड़ियों में भी पढ़े लिखे होने लगे। कहीं ऐसा न हो पेट भरने को भी उद्यम करना पड़े, परन्तु देखो अपना भी बेली राम है।

शोभा०–पण्डितजी काई सोचबा लाग गया ? अब ई सगाई का बारा में काई करणों।

मिथ्या०–करणों काई, आप भली चिन्ता करी एक सगाई काई ल्याओ पचासूं कर आऊं। म्हे भी तो आखिर पण्डित हां। बीसों सगायां आप मारवाड़ी लोगां में म्हां का हाथ सूं हो चुकी है। थे काई सोच फिकर मत करो काल सगाई कर आऊं। अजी मुश्किल है तो लड़का की सगाई मुश्किल है, लड़की की सगाई को काई।

( आपही आप ) आज तो अच्छा मामला हाथ लगा, रामजी चाहे तो बेड़ा पार है।

शोभा०–आछो तो किसना खवास ने भी साथ ले पधारो। देखो घराणों सिरै देखजो, अगर हुंडीवाल मिलै तो घणो चोखो है। कदेई काम आसी और देखो जीं दिन बात कही जिणां को ख़याल राखजो।

मिथ्या०–आछो आप पधारो, सब काम होजासी। काल दिनऊग्यां जयपुर जाऊंला। खवास ने स्टेशन पर भेज दीज्यो।

शोभा०–ठीक ( जाता है )

मिथ्या०—देखो ज्ञानचन्द की बात, हूं ! बड़ी मुश्किल और मिहनत से वर्षों तक लगातार कोशिश करके तो तमाम हिन्दू जाति को अपने पंजे में लाये और ब्राह्मणों को बार २ सर्वोपरि बताकर अपने पेट भरने का उपाय निकाला और अब यह लोग हमारे सब भेद खोले देते हैं। लेकिन क्या है ? ईश्वर चाहे तो ऐसा लोगों को बहकावें कि ऐसे आदमियों की छाया से दूर भागें और पास न आने दें। आखिर हम भी पण्डित हैं। थोड़े पढ़े तो क्या हुआ मारवाड़ियों को जाल में फँसाये रखने के लिये तो इतना पढ़ा हुआ भी बहुत है। अरे ज्ञानचन्द ! तू हमें भी सहज मत जानना, तेरी हज़ार कोशिश और हमारी एक।



## द्वितीय अङ्क, दृश्य २.

*( स्थान ज्ञानचन्द की हवेली )*

लक्ष्मी–विद्या के पिता, आज तो अपने पड़ोस में सेठ शोभाराम और उनकी स्त्री के बड़ी तक़रार हुई।

ज्ञान०–हां! परन्तु प्रिये, क्या नई बात है। जहां अविद्या महारानी का राज्य है वहां तो बहुधा इसी प्रकार तक़रार हुआ करती है। सच पूछो तो मूर्ख स्त्रियों ने पुरुषों के नाक में दम कर रक्खा है, ज़िन्दगी तल्ख़ हो गई है। कई मनुष्य ऐसी स्त्रियों से दिक आकर घर बार छोड़ साधु बन-जाते हैं, कई ज़हर खाकर अपघात करलेते हैं और कई हत्या के दोषी होकर फांसी चढ़ाये जाते हैं या जन्म पर्यन्त कारा-गृह में अपना अमूल्य जीवन बड़े ही कष्ट के साथ व्यतीत करते हैं। हे प्रिये, मेरी तुच्छ बुद्धि में तो ऐसा आता है कि पुरुषों को ऐसी मूर्खा कलहकारिणी स्त्रियों को ब्याह कर जन्म भर का दुःख मोल लेने की अपेक्षा कुंवारा रहना अति-उत्तम है।

लक्ष्मी–वास्तव में मूर्ख स्त्री क्या नहीं करती? परन्तु हे प्राणनाथ! स्त्री का मूर्ख रहना तो पुरुषों का ही दोष है हम अबला क्या करें, हम पर पुरुष क्या कम अन्याय और अत्याचार करते हैं। हमको अपने वश में करने के लिये मनमाने ग्रन्थ बनाकर कह दिया कि स्त्रियों को पढ़ने का ही अधिकार नहीं है, बल्कि हमको शूद्र बतला कर हमसे शास्त्र तथा धर्म पुस्तक सुनने तक का अधिकार छीन लिया और

बड़ा छल और कपट करके हमको विद्यारूपी उजियाले से वंचित रक्खा। हमको ईश्वर ने पहिले ही निर्बल बनाया और फिर पुरुषों ने तो स्वार्थवश हो हमारा सब मिटियामेट कर डाला, अब हम क्या करें?

सबल मिल अबलाओं को मारा।
हमको पुरुषों ने हतडारा ॥ टेर ॥
सबल हमारे करुणाहारेजी।
स्वारथजाल पसारा ॥
निज परयोजन सिद्ध करन को।
कपट ही कपट विचारा ॥ सबल० ॥
निज स्वारथयुत कथा वारता।
मनज ग्रन्थ रच डारे ॥
अबलावश करने के कारण।
लाखों फंद पसारा ॥ सबल० ॥
विद्या ज्ञान दान कर निज वश।
हम को राखि अनारी ॥
पशु का काम लिया हम सेती।
मानसधर्म विसारा ॥ सबल० ॥
विद्या भानु प्रकाश है जाते।
मानुष घट उजियारा ॥
हम बिन विद्या अबलानारी।
नहीं कोई रखवारा ॥ सबल० ॥

इतना ही नहीं किन्तु हमसे दिन भर सिवा दास दासियों के काम के और कुछ काम नहीं लिया जाता।

पति हम दास-करम ते हारी, एक बीनती सुनो हमारी ॥

पहर निशा से पीसन लागें, जैसे पीसनहारी ।
छान छून झट हट्टी धावें, शौच करम निबटारी ॥ प० ॥
चट घट ले पनघट को जावें, औघट बाट खरारी ।
धावें लावें छान छून जल, जैसे हा ! पनिहारी ॥ प० ॥
बाल लाल तज रोवत सोवत, भागें धेनु दुहारी ।
सास ननद की सेज उठाकर, लागें देन बुहारी ॥ प० ॥
चौका पोता बासी बरतन, छूवा छून घनारी ।
भिन्न भिन्न मनभावन व्यंजन, जैसे रंदन गारी ॥ प० ॥
चौका बरतन हंडिया कुंडिया, मांजत झूंठी थारी ।
बीच बीच में बालक सेवा, अर्ध दिवस बीतारी ॥ प० ॥
शेष दिवस में अन्नादिक शुध, मिश्रित काम घनारी ।
पुनि वहि चूल्हा धेनुदुहारी, आदि विषाद लगारी ॥ प० ॥
सास ननद की सेज बिछा कर, पुनि उन पग पकरारी ।
दाबत दाबत सोरही सासू, तब हम चैन परारी ॥ प० ॥
एते पर भी यश नहिं कबहूं, मारन ताड़न गारी ।
जेठ जिठानी ससुर आदि की, तान सहें बहु खारी ॥ प० ॥

और फिर तुर्रा यह है कि हम पर अत्याचार करते हैं, हमारे साथ जानवरों का सा वर्ताव करते हैं, हम को किसी योग्य नहीं समझते, न हम से किसी गम्भीर विषय पर सम्मति लेते हैं । हमारा जीवन भी तो मनुष्यों ने कड़वा कर डाला है तो फिर आप जानते हैं—

"खाड खने जो और को वाको कूप तयार" ।

ज्ञानचन्द्–हे प्रिये, यह केवल पुरुषों ही का दोष नहीं है, परन्तु समय का भी प्रभाव है। देखो वह भी एक समय था जब स्त्रियां पंडितों से शास्त्रार्थ करती थीं। विद्या को सर्वोपरि आभूषण मानते थे और स्त्रियों का बड़ा आदर और सत्कार किया जाता था। कदाचित् फिर भी समय आयेगा जब स्त्रियों का यथायोग्य आदर और सत्कार होगा।

क्यों सेठजी के तक़रार क्यों हुई, क्या कोई विशेष कारण था ?

लक्ष्मी–नहीं विशेष कारण तो कोई नहीं था, परन्तु सेठानीजी वस्त्र आभूषण इत्यादि के लिये हरदम तक़रार ही करती रहती हैं, विशेष कर जब सेठजी भोजन करने को घर आते हैं। आश्चर्य्य की बात है कि इनके यहां इस प्रकार वस्त्र आभूषण धन नौकर चाकर हैं, परन्तु फिर भी वह कभी सन्तुष्ट नहीं रहतीं प्रातः संध्या सेठानी लड़ाई झगड़ा करती ही रहती हैं।

ज्ञान०–हे प्रिये, यदि सेठानी पढ़ी लिखी होतीं तो आज उनसे लड़ने की ठौर उनकी सप्रेम सेवा करतीं, अपने धर्म को पहिचानतीं। पति की सेवा करना स्त्रियों का मुख्य धर्म है, देखोः—

बढ़कर धर्म नहीं, पति अपने में राखो ध्यान
कि बढ़ कर धर्म नहीं॥
तन भी दीजे, धन भी दीजे, अर्पण कीजे मान। कि०
पति अपने की आज्ञा मानो, यही नेम व्रतदान। कि०

जो पति की आज्ञा नहीं मानो, मिले नरक-स्थान । कि०
जो पति की सेवा नहीं करतीं, करें दुःख सामान । कि०
एक ही धर्म पती की सेवा, करे यही कल्याण । कि०
सुख सम्पति चाहे जो तुम को, कहा मेरा लो मान । कि०

लक्ष्मी—हे प्राणनाथ, यह बात वास्तव में बहुत ठीक है, परन्तु यह भी याद रहे कि—

जिस घर में होता नहीं, स्त्रियों का सतकार ।
नरक तुल्य वह धाम है, निष्फल सब व्यवहार ॥

ज्ञान०—निस्सन्देह स्त्रियों का सत्कार करना पुरुषों का प्रथम धर्म है । विद्या कहां है, उसे बुला लाओ, सब मिलकर भोजन करें ।

लक्ष्मी—वह पढ़ने के कमरे में बैठी हुई, पहिले तो कुछ लिख रही थी अब शायद समाचारपत्र देख रही है, मैंने दो एक दफ़ै बुलाया भी परन्तु वह आई नहीं, देखिये फिर जाती हूं, आप स्नान संध्या से निपट लें ।

( जाती है )

## द्वितीय अङ्क, दृश्य ३.

*( विद्यावती बैठी हुई विलाप करती है )*

विद्या०—कोई मेरी अरज़ सुनोगे, कन्या करत पुकार ॥

हम जन्मत सब होहिं उदासी, दासी दास हमार ।
बहन भानजी फूफी मौसी, देनलगी सब गार ॥ को० ॥
मात तात ननसाल सकल ही, शोकित भो परिवार ।
मित्रवर्ग सब भयेजु उदासी, शत्रू हरष अपार ॥ को० ॥
एक उदर तें दोउ तन निकसे, भ्राता और हमार ।
किम् कारण ते हीत रीत हित, बुधजन करहु विचार ॥

*( प्रवेश लक्ष्मी )*

लक्ष्मी—बेटी, आज तू अकेली बैठी हुई क्या विलाप कर रही है, चल तेरे पिताजी भी आगये हैं ।

विद्या०—माता, आज हमारे पड़ोस में शीतलप्रसाद की स्त्री के पुत्री हुई, सो कहां तो सकल ही परिवार के बड़ी बड़ी आशा बांधते थे और फूले फूले फिरते थे, परन्तु पुत्री का जन्म सुनते ही सब शिथिल हो गये और उदासी छा गई । माता, हम लड़कियों की दशा तो देखः—

धर्मविरुद्ध बात कस ठानी, या को गुप्त भेद नहिं जानी ॥

करकस वचन सुनावे री मय्या, भावज रिस भर बानी ।
बिशिवासर पितु मुरझे री मय्या, हम को देख सयानी ॥

हम व्याधित हों सार न पूछे, परी परी करैहानी।
जीवित रहैं हर्ष नहीं आनें, मरें तो ना पछितानी॥
भव्या भई तनकसी पीड़ा, शोक सीम नहिं जानी।
धावत लावत वैद सयाने, दवा करत मन मानी॥
दासीकरम सिखावत हमको, सेवक सम बरतानी।
विद्यादान देत नहिं याते, कौशलकला अयानी॥ धर्म०॥

लक्ष्मी-पुत्री, तेरा कथन यथार्थ है। भारतवर्ष में पुत्रियों की ऐसी ही दुर्दशा है, परन्तु क्या किया जाय, दीन पुरुषों को भी क्या दोष है, जिस घर में तुम्हारा जन्म है वहां से सुख, सम्पत्ति और द्रव्य का भी गमन है। हे पुत्री,

जो सुसराल मिले धनधारी, धनमद कर अभिमानी।
यदि कंगाल कुचाल भिखारी, द्रव्य हरण दुख दानी॥
सास ननद जो हों कलिहारी, तिनकी हम बलिहारी।
यदि अघकारी कुपथविहारी, वह अधिकी भयकारी॥
विद्याहीन अधम अविचारी, पति पुरुषारथ हारी।
छेदन भेदन मारी रुआरी, जीवनहूं दुखकारी॥ धर्म०॥

हे बेटी, जो धनाढ्य ससुर मिला तो धन के मद में हमको तुच्छ समझना है और हमारा दिया हुआ स्वीकृत नहीं होता और जो दरिद्री और दुराचारी हुआ तो हमको निशदिन द्रव्य के लिये सताता है और क्लेश पहुंचाता है। जब सास, ननद लड़ाकू और रीस वाली हों तो दुःख का पार ही क्या और जो पापी दुराचारिणी हुई तो और भी विशेष दुःखदायी है। जो पति निरक्षर कुमार्गी व्यभिचारी या

पुरुषार्थहीन हुआ तो रात दिन की मारपीट गाली गलोच रहती है बस जीना कठिन होजाता है। और जो हे पुत्री, तुम में किसी प्रकार की कुबान और कुचाल हुई तब भी हम हीं को दुःख, लज्जा और क्लेश होता है। इतने दोष रहित होना सम्भव नहीं। यातें पुत्री का जन्म लेना ही मानो दुःख का जन्म लेना है। इतने पर भी यदि सर्व प्रकार उत्तम है तब भी प्रचलित कुरीतियों के कारण द्रव्य की हानि तो अवश्य ही उठानी पड़ती है और जो हमारे पास द्रव्य नहीं हुआ तो या तो ऋणी होना पड़ेगा या पुत्री को बेचना होगा सो दोनों ही अवस्था दुःख और लज्जा संयुक्त हैं। यदि हमारे पास धन भी है तो धन मनुष्य और घर के पदार्थरहित तो अवश्य ही होंगे, लोककहावत सत्य है:—

देना भला न बापका, बेटी भली न एक।
चलना भला न कोस का, जो विधि राखे टेक॥

यदि पुत्री कलिहारी जारी, निठुर निर्लज्ज लबारी।
मात पिता पर रेखाकारी, सदा दिलावहिं गारी॥
भारतसुता जन्म अधिकारी, जन्मत होहिं दुखारी।
विधवा भई भया दुख भारी, दोउ कुल विपत भंडारी॥
भारतशील शिरोमणि नारी, सो तन भई कटारी।

विद्या०—हे माता, इसमें हमारा क्या दोष है या तो ईश्वर का है कि जिसने हमको उत्पन्न किया या पुरुषों का दोष है, जिन्हों ने नियम बांधे।

धन बस मात तात हित तोरे, आठ साठ संग नाता जोरे।
मूक बधिर यदि कुष्ठी अन्धा, हीनपुरुष घर डारहिं फंदा॥

तदपि न पति मान चित चोरें, सेवा मांहि नाहिं मुख मोरें ।
पितु माता आज्ञा शिरधारें, नाहिन कहैं सहैं अति रूवारें ॥

भूंख निरादर ताड़न त्रासा, सहैं रहैं तज निज कुल आशा ।
दूर देश यदि देहिं निकाली, परियन संग रहैं बनवासी ॥

पतिवियोग भोगें धर धीरा, अथवा देवें दिव्य शरीरा ।
विधवाकष्ट अगम्य निराला, सहैं निरन्तर भारत-बाला ॥

निर-अक्षर कहां पत्र पढ़ावें, दारुण दुख कैसे समझावें ।
कैसे बाबल वीर बुलावें, तिनको रो रो कथा सुनावें ॥

मनचिंता मन ही में मारें, सौ सौ दाग हीय विच धारें ।
ना पितु मात निकट कोउ भैया, तिन को खोल दिखावें मैया ॥

नोट—इत्यादि दारुण क्लेश जो, भारतसुता निशदिन सहैं ।
तिन के उदर से भर्त जन, नरसिंह नर कैसे लहैं ॥

हाय, मात पिता द्रव्य के लोभ से आठ वर्ष की कन्या को साठ वर्ष के बुड्ढे के साथ व्याह देते हैं अथवा चाहे वर गूंगा हो चाहे बहरा हो या कोढी, अन्धा पुरुषार्थ, करहीन हो, हमारे गले में वरमाला पहरा ही देते हैं, तदपि हम उस को पति मान उससे विमुख नहीं होतीं और तन, मन से उस की सेवा करती हैं और सहस्रों आपत्ति झेलती हैं, परन्तु माता पिता की आज्ञा उल्लंघन नहीं करतीं । जो पिता हम को अन्य देश में भी देता है तो वहां भी बिगाने मनुष्यों में दासी बन अपने कुल की आशा छोड़ रात दिन मारन ताड़न भूख प्यास सह करके रहती हैं दैवात् यदि पति से वियोग हुआ तो या तो धैर्य के साथ वियोग भोगती हैं या अपने सुन्दर तन को उसके वियोग में भस्म करदेती हैं । तो

जो विधवाओं को कष्ट होते हैं न तो उनकी सीमा है और न वे जानने में आसक्ते हैं। वे दुःख हमको रात दिन सहने पड़ते हैं। हे माता, हम विद्यारहित होने के कारण पत्र द्वारा अपना अगाध दुःख माता पिता आदि को नहीं जता सकती हैं। हे माता, हज़ारों दाग, जो हमारे दिलों पर रहते हैं और जो क्लेश हमारे दिल में उत्पन्न होते हैं वे मन के मन ही में रह जाते हैं। हाय, न तो हमारे पास माता पिता ही हैं न भावज ही हैं कि खोल के अपने दाग दिखावें, अपने मन की कहें और उनकी सुनें, बस मन मार कर रह जाती हैं।

लक्ष्मी—हे बेटी, तू सत्य कहती है परन्तु हम स्त्रियों के तो भाग्य में ईश्वर ने ऐसा ही लिखा है॥



## द्वितीय अङ्क, दृश्य ४.

**स्थान जयपुर, रामबाग ।**

( बुद्धिसागर और विद्यासागर बाग में मिलते हैं )

बुद्धिसागर-( हाथ मिलाकर ) ओ हो, मित्र विद्यासागर ! आज तो कई वर्षों के पश्चात् आप के दर्शन प्राप्त हुए। इस तुच्छबुद्धि से ऐसी क्या भूल हुई कि जिसके लिये आपने इस दास को प्रेम भरी संगत से वंचित रक्खा । सज्जनों के मिलने से कैसा आनंद आता है ।

विद्यासागर-हे मित्र, आप ऐसा क्यों कहते हैं, आपका सच्चा प्रेम, सरलस्वभाव, वास्तविक मित्रता निशदिन याद आती थी । शायद आपको मालूम नहीं है कि मैं कालेज छोड़ने के बाद अपने माता पिता से आज्ञा लेकर कलाकौशल सीखने के हेतु जापान देश चला गया था । समय की न्यूनता और कार्य्य की अधिकता से आप को पत्र नहीं लिखसका, परन्तु आप निश्चय जानिये-आपका असीम प्रेम, अपना बाल्यावस्था का वार्तालाप, अपना विद्यार्थीजीवन, सब बातें घड़ी घड़ी याद आती थीं । अब मेरा विचार है कि यहां पर काच, छतरी, दियासलाई इत्यादि के कार्य्यालय खोलकर अपनी उन्नति और अपने देश की सेवा करूं ।

बुद्धि०-मुझे अत्यन्त हर्ष है कि आप कलाकौशल सीख कर पीछे भारत में पधारे हैं, हमारे देश का अहोभाग्य है कि आप जैसे विद्वान् देशभक्त देशोन्नति पर आरूढ़ हुए हैं । धन्य है

आपका उद्योग, धैर्य और उत्साह, धन्य हैं वे माता पिता जिन्होंने आपको जन्म दिया और इस प्रकार खर्च उठा कर विद्या पढ़ाई।

विद्या०—यह सब ईश्वर की कृपा और आपके अनुग्रह का फल है।

बुद्धि०—आपके शरीर का स्वास्थ्य तो वहां ठीक रहा? आपने अपने भोजन आदि का क्या प्रबन्ध किया, कोई कठिनाई तो नहीं आई?

विद्या०—हां! ईश्वरेच्छा से मैं वहां बहुत आरोग्य रहा, भोजनादि के प्रबन्ध के लिये वहां ठौर २ भारतवर्ष के विद्यार्थियों के लिये प्रत्येक विद्यालय के समीप बड़े २ विद्यार्थी-जन-निवासालय बने हुए हैं, भोजन बनाने वाले इत्यादि सब हिन्दुस्तानी सेवक हैं, इस समय वहां कम से कम दो सहस्र भारतवर्ष के विद्यार्थी कई प्रकार की विद्यायें अध्ययन करने के हित रह रहे हैं, कठिनाई कुछ भी नहीं आती, सब प्रकार की वस्तुएं सहज में मिल जाती हैं।

बुद्धि०—आपने वहां क्या क्या अद्भुत बातें देखीं?

विद्या०—हे मित्र, जो जो बातें मैंने वहां देखीं उन सबका वर्णन तो अभी करना असम्भव है, परन्तु जापानियों का भारतवर्षियों के साथ प्रेम, बन्धुभाव, उनकी देशहितैषिता, चातुर्य्यता, उदासीनता, विद्या, बल, बुद्धि एक एक प्रशंसनीय है। सम्राट् मिकाडो महाराज ने पिछले बीस तीस वर्ष ही में वह उन्नति कर दिखाई है कि जो पृथ्वी पर कोई देश एक शताब्दी में भी नहीं दिखा सकता है।

बुद्धि०-हां ! तो हे मित्र, वास्तव में जापान देश की ऐसी शीघ्र उन्नति होने के क्या क्या मूलकारण हैं ?

विद्या०-जापान देशकी उन्नति [illegible] कई कारण हैं प[illegible] ते तो भारतवर्ष की सी घातक कुरीतियां [illegible] भेद, [illegible], फूट, अनगिनत धर्मप्रणालियां वहां [illegible], दूसरे [illegible] बड़े ही देशभक्त निडर और प्रयत्न[illegible] के [illegible] होते हैं, दूसरे देशों को जाकर वहां की नई २ विद्याएं, कला-कौशल सीखते हैं और फिर अपने देश को लौटकर उनको वहां प्रचलित करते हैं। विद्याध्ययन करना लड़के और लड़कियों, दोनों को आवश्यक है। अतः प्रायः सब सुशिक्षित हैं। इसके अतिरिक्त वहां की सब प्रजा की भाषा, मन्तव्य, विचार और धर्म एक हैं। सब लोग एक दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति मानते हैं और भी कई कारण हैं जो समय मिलने पर सविस्तर वर्णन करूंगा।

बुद्धि०-हे मित्र, यदि आपकी तरह भारतवासी अपने देश से अन्य देशों में जावें तो मैं आशा करता हूं कि भारतवर्ष भी बहुत शीघ्र उन्नति कर जाय।

विद्या०-वास्तव में, यही तो कारण था कि प्राचीन समय में भारतवर्ष इस प्रकार प्रसिद्ध हो गया था। महाराज धृतराष्ट्र ने कन्धार के राजा की कन्या गान्धारी को व्याहा था, महाराज अर्जुन अमेरिका पधारे थे। मैक्सिको और जावाद्वीप में अबतक हिन्दू धर्म की बहुतसी बातें पाई जाती हैं और भी कई प्रमाण मिल सकते हैं, जिससे ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में भारतवासी बड़े देशाटन करनेवाले और उत्साही थे।

बुद्धि०—परन्तु हे मित्र! हमारे देश में तो आज कल कलाकौशल जाननेवालों को शूद्र और न जानने वालों को द्विज कहते हैं। उनके हाथ का पानी तक नहीं पीते हैं और अन्य देश में जाने वालों को जाति से बाहर निकाल देते हैं। कभी हमारा भी भला होगा?

विद्या०—हां! यह सब बातें धीरे धीरे मिट जायंगी, भारत का भी भाग्य फिर उदय होगा। समय आरहा है। कोई क़ौम, क़ौम नहीं बन सक्ती, जब तक उस में बड़े बड़े देशाटन करने वाले विद्वान् और उत्साही मनुष्य न हों। कोलम्बसने अपने देश के लिये एक नहीं दुनियां पैदा की, वास्कोडिगामा ने अपनी क़ौम के लिये भारतवर्ष का बड़े ही परिश्रम से रास्ता मालूम किया और अब भी यूरोप के निवासी विद्वान् अपने देश के हित के लिये दूर दराज देशों और जगहों में घूम रहे हैं। हाल ही उत्तर और दक्षिण ध्रुवों के मालूम करने में लगे हुए हैं, जान का ख़तरा है परन्तु पीछे नहीं हटते। जो लोग यहां भूखे नंगे ग़रीबी के मारे जीते ही मरे बराबर हो रहे हैं अपने अमूल्य जीवन को धूल में मिला रहे हैं, अन्य देशों में क्यों नहीं जावें, रुपया कमावें और अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करें।

( स्मरण करके ) हां! मैंने सुना है अभी आप का विचार विवाह करने का नहीं है। क्या यह बात ठीक है?

बुद्धि०—हां! इस बात में आप की सम्मति लेनी थी। मैं अभी अंगरेज़ी में बी० ए० की परीक्षा दे चुका हूं और अब पूना एग्रीकलचरल कालेज ( कृषि-विद्यालय ) में

जानेवाला हूं। पिताजी फरमाते हैं-कि अजमेर में एक लाला ज्ञानचन्द साहब जातिसुधार के नेता हैं। उन के एक विद्यावती नाम की अति सुन्दर सुशील कन्या है। आयु भी कोई उसकी १३ वर्ष की है। देवनागरी, भूगोल, इतिहास, संस्कृत में गीता रामायण इत्यादि खूब पढ़ी है और बुद्धि भी उसकी ठीक बतलाते हैं, यदि आप सम्मति दें तो सगाई की बात चीत करली जाय। अलबत्ता विवाह तीन वर्ष पीछे पूना से लौट आने पर किया जायगा।

विद्या०-हे मित्र! यह विचार ठीक तो प्रतीत होता है, क्योंकि तबतक आप की आयु २५ वर्ष की हो जायगी और फिर आप के पिताजी की भी आज्ञा है तो ऐसा ही करना उचित है।—

बुद्धि०-परन्तु मैंने अपने जातिसुधार के एक अगुत्रा से सुना था कि शीघ्र सगाई करने में भी हानि है और वह विद्वान् समाजसुधार के विषय में एक अनुकरणीय है।

विद्या०-वास्तव में उन महाशय का कहना यथार्थ है, क्योंकि जल्दी सगाई करने से एक तो लड़का लड़की के मन में विवाहित व्यवस्था की उत्कंठा लग जाती है जिससे उनके विद्याध्ययन में हानि पहुंचती है, दूसरे लड़का लड़की के माता पिता व्यर्थ रस्मों की पाबन्दी में पड़कर बहुतसा रुपया निष्फल उड़ा देते हैं, परन्तु आपकी हालत में यह दोनों ही बातें नहीं हैं, इसलिये सगाई करली जावे तो कुछ हानि नहीं है। ( जाते हैं )

## तृतीय अङ्क, दृश्य १.

स्थान ज्ञानचन्द की हवेली।

( प्रवेश लक्ष्मी व ज्ञानचन्द )

लक्ष्मी—विद्यावती के पिता, आज तो आप दुकान से बड़ा विलम्ब करके पधारे। क्या कारण हुआ? मैं बड़ी देर से आपकी बाट जो रही थी, भोजन तैयार है।

ज्ञानचन्द—आज कुछ कार्य अधिक आन पड़ा, मेयो-कालेज के राजकुमार दूकान पर सामान खरीदने आगये थे इस कारण विलम्ब हो गया।

लक्ष्मी—ठीक, आज हम स्त्री-समाज में गईं थीं श्रीमती शुशीलादेवीजी का स्त्रीशिक्षा पर व्याख्यान था। अनुमान दोसौ स्त्रियां एकत्र हुईं थीं, बड़ा आनन्द आया।

ज्ञान०—मैंने सुना है कुछ दिनों से आपकी समाज बड़ी उन्नति कर रही है। आज वहां क्या क्या कार्यवाही हुई?

लक्ष्मी—पहिले तो धर्मादेवीजी ने ईश्वरप्रार्थना की, फिर अनाथ कन्याओं के उत्तम उत्तम भजन हुए। और फिर सुशीलाजी का व्याख्यान होकर पुत्रीपाठशाला के लिये चन्दा एकत्र किया गया।

ज्ञान०—श्रीमती सुशीलादेवीजी की हमने बड़ी प्रशंसा सुनी है, उनका व्याख्यान तो सुना है, बड़े उत्तम होते हैं। हम

कभी २ उनके समाचारपत्र "भारत स्त्री-सुधार" को देखते हैं। मालूम होता है वह भारतवर्ष में बड़ी विद्वान् और योग्य स्त्री हैं, उन्होंने स्त्री-शिक्षा पर क्या कहा ?

लक्ष्मी—विद्या के पिता! सब व्याख्यान का वर्णन करना तो कठिन है, परन्तु जो कुछ उन्होंने हमारी जाति की स्त्रियों के लिये कहा वह संक्षेप से कह देती हूं। उन्होंने कहा कि—

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि आजकल हमारे देश की वैश्यजाति में स्त्री शिक्षा न होने से वैश्य भाइयों की क्या दुर्दशा हो रही है? इन महाशयों के निवासस्थान बड़े बड़े होने पर भी बड़े अपवित्र रहते हैं। आभूषण वस्त्र इत्यादि के लिये निशदिन देवासुर संग्राम हुआ करते हैं। बालकों का भलीभांति पालन पोषण नहीं किया जाता है। स्त्रियों से किसी भी गम्भीर विषय पर सम्मति नहीं ली जाती, बल्कि बहुधा स्त्रियां दास दासी के कार्य के अतिरिक्त किसी योग्य नहीं समझी जातीं। स्त्रियों के न पढ़ाने से केवल स्त्रियों की ही हानि नहीं है, परन्तु हमारी भावी-सन्तान, जिस पर इस देश की उन्नति निर्भर है, उसकी बड़ी हानि हो रही है। क्योंकि सन्तान का विद्वान्, शूरवीर, गुणी और योग्य होना केवल उनकी माताओं ही पर निर्भर है। अशिक्षित स्त्री यह नहीं जान सकती कि पति क्या है और उसकी सेवा किस प्रकार की जाती है। कई अकल के अन्धे गांठ के पूरे स्वार्थी कहते हैं कि स्त्रियां पढ़ने से विधवा हो जाती हैं और उनके आचरण शुद्ध नहीं रहते।

शोक है ऐसे मनुष्यों की बुद्धि पर ! हम ऐसे मनुष्यों का भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की ओर ध्यान दिलाते हैं जब कि स्त्रियां बड़े २ महान् विद्वानों से शास्त्रार्थ करती थीं।

मैत्रेयी, गार्गी, घोसाला, अनुसूया, लीलावती इत्यादि स्त्रियां बड़ी २ विद्वान् और पण्डिता हो चुकी हैं। जिन के आचरण सदैव शुद्ध रहे और अब भी सैकड़ों स्त्रियां पढ़ी लिखी भारतवर्ष में उपस्थित हैं, जो आनंद से सुहाग भोग रही हैं।

ज्ञानचन्द्–वास्तव में उन्होंने बहुत अच्छा कहा।

लक्ष्मी–(स्मरण करके) हां, विद्या के पिता ! मुझे आप से एक बात पूछनी थी और वह यह है कि विद्यावती की उमर अब १३ वर्ष की हो गई है। अभीतक आपने उसकी सगाई की चिंता नहीं की।

ज्ञान०–हे प्रिये, जैसा कि मैंने कभी आप से पहिले कहा था, जयपुर के लाला विवेकानन्दजी को पत्र भेजा है, उनके सुपुत्र लाला बुद्धिसागर बी. ए., एग्रीकलचरल कालेज पूना गये हैं, सगाई क़रीब क़रीब तय हो गई है, उनके वहां से लौटने पर शुभमुहूर्त देखकर विवाह कर देंगे।

लक्ष्मी–हां ! मुझे याद पड़ता है कि आपने मुझ से सम्मति ली थी यह तो बहुत अच्छा किया। अब व्यय इत्यादि का अनुमान करना है और विवाह की रीति भांति किस प्रकार होगी, यह भी देखना है।

ज्ञान०–विवाह में ख़र्च मामूली किया जायगा। ५० मनुष्य बरात में बुलवावेंगे और बिदा में हमारे दश

हज़ार रुपये, जो इण्डियन नेशनल बैंक में जमा हैं, उनमें से दो हज़ार रुपये विद्या के नाम अलग कर दिये जावेंगे, ताकि उसका हाथख़र्च चला करे और वह किसी की मोहताज न रहे, बैंक से सूद उसको माहवार मिला करेगा। भजन इत्यादि के वास्ते अनाथालय से लड़के और लड़कियों की भजनमण्डली आजायगी। क़रीब ५००) रुपया विवाह में लगावेंगे। और विवाह की सब रस्में वैश्यमहासभा के नियमानुसार करेंगे इसमें आप की क्या सम्मति है—

लक्ष्मी-हां बहुत ठीक है, ऐसा ही किया जाय।



## तृतीय अङ्क, दृश्य २.

### स्थान जयपुर।

( प्रवेश मिथ्यानन्द, किसना व सेठ धनीरामजी )

मिथ्या०—आये हम कन्या-रत्न-दलाल,
भाग्य रंडवों के जगानेवाले।

अन्धा बहरा पांगला, काणा और कुरूप।
साठ बरस का क्यों न हो, हम करके छैल अनूप
सगाई तुरत करानेवाले॥ आये०॥
दांत गिरे तो क्या हुआ, बेशक टूटो डाढ़।
ज़रका सच्चा चाहिये, हम सब की मेटें राड़।
तुरत शादी करवानेवाले॥ आये०॥
काया में बल पड़ गया, धोले हो गये केश।
चमतकार कलदार को, हम करके दूल्हा भेश।
नई सुसराल दिखानेवाले॥ आये०॥
पेट चढ़ा आसमान में। पांव गये पाताल।
नाममात्र नर चाहिये, हम छाती में ज़र डाल।
दान कन्या का दिलानेवाले॥ आये०॥
श्वास खांस कफ पित्त की, होती रहो शिकाल।
गांठ का पूरा चाहिये, हम लावें कन्या सात।
मंत्र बिन जादू चलानेवाले॥ आये०॥
शक्ती हटी चमड़ी फटी, घटी जीवकी आस।
नज़र मिटी ऊमर घटी, दुर्गुण भरे पचास।
खास को तिलक दिवानेवाले॥ आये०॥

आशीर्वाद, सेठसाहब ! मैं अजमेर से चलकर आज सेठ शोभारामजी की कन्या रूपवती को सगपण करणे आयो हूं, मैं सुणी है आपके एक लड़को १८ वर्ष को पढ़्यो लिख्यो है। और हाल आप उणां की सगाई भी नहीं करी है। लड़की रूप में यथानामा तथागुणा है ओ सगपण आपके करवा योग्य है।

धनी०–पधारो, महाराज पधारो, लड़को तो है। लड़की की उमर काई है और तुम्हारा सेठां की हुंडी पत्री किस्यान चालै है।

मिथ्या०–सेठसाहब, लड़की कोई दस वर्ष की है, परंतु बड़ी सुडौल, सुंदर और चतुर है। और सेठ शोभारामजी हा जद तो घणा ही हुंडीवाल हा। उणारा दादा हिम्मतमलजी और पिता पूरणमलजी अजमेर में बड़ा बड़ा नामी काम करया छा। देश देश में उनकी दुकानें थीं, बड़ा २ कार जिमणार कीनी, धर्मशाला बणवाई, सदावर्त बिठाया। घणा ही उत्तम २ कार कीना, परन्तु थोड़ा दिना सूं उण को लड़को कुपात्र होणे सूं और उणारा विवाह आदि में खर्च अधिक करणे सूं अब कुछ ठीक २ रह गया है। फिर भी टूट्या है परन्तु टोडा है।

धनी०–( स्वयं ) आपणै किस्यो लड़को है। आपां खुद ही लड़का छां।

( प्रगट )

महाराज थोड़ा दूकान मायँ पधारज्यो। आपने मालूम है हमारा सेठाणीजी पारसाल प्लेग की बीमारी में आकर

हमाने बुढ़ापा में दगो दे गया। अगर आप कृपा करने ओ काम आपणै बणाय देओ तो आपको जन्मभर गुण नहीं भूलूं और जो कुछ म्हारा सूं बण आसी आपकी सेवा करस्यूं। आप जाणो, एक आदमी बिना ओ इतरो धन सब फीको है। हाल और नहीं तो घर तो खुल्लो लादसी, बुढ़ापा में कीं आराम ही मिलसी।

मिथ्या०-(स्वयं) देखो, इस बुड्ढे की समझ पर पत्थर पड़े हैं। साठ वर्ष की उमर में विवाह करने चला है, परन्तु इसमें अपना क्या बिगाड़ है।

कोऊ बिगरो कोऊ बनो, हमैं कुछ लाभ न हानी।
निजकारज सिध होय, त्याग परकाज कहानी॥

मारवाड़ियां में तो इस्या सगपण कई होवै है। और फेर आपणो काम तो इस्या हीं सगपण में बणसी।

(प्रगट) सेठसाहब, मामलो तो मुश्किल है, बड़ी कोशिश करणी पड़सी। पण काई दिरावोला?

धनीराम-(दो उंगली उठाकर) इतरा।

मिथ्या०-(पांच उंगली दिखाकर) इतरा सूं काई कम? कुछ सेठसाहब ने भी मदद करनी पड़ैली।

धनी०-आछो, थे कहो सोई करदेस्यां। सेठजी ने कितराक दिरावोला?

मिथ्या०-ऐही कोई पांचेक हजार।

धनी०-पांच हजार! (सोचकर) रक़म तो बहुत ज्यादा छै (स्वयं) इतरा धन को करणो काई छै (प्रगट) आछो, आपतो करो तै।

मिथ्या०—तै करबानैं काई छै, तै ही समझो, आप पक्की जाणो । काल पाछो जा, पूछ कर मुहो भिजवा देस्यूं आप रकम दिरवाय द्यो ।

धनी०—रकम के वास्ते हरमुखराय रामभजनजी की दुकान के नाम हुंडी ले पधारो। बात असल आ है इतरा धन नै छोड़कर म्हारे काई करणो है आपकी कृपा से टहल बंदगी तो आछी होसी, अजी और नहीं तो रोबा वाळी तो घर में लादसी । नहीं तो आप जाणो हो । ओ धन पछै की काम को आप मरयां जग परले ।

मिथ्या०—हां, आ बात तो सांची है । देखो सेठसाहब, आ देबा लेबा की चरचा कठेई नहीं होवे । सेठ शोभारामजी कोई इस्या उस्या सेठ नहीं छै । अजमेर में आदू सेठ छै, उणारी इज़्ज़त में बट्टो लाग जावैलो । विवाह बड़ी धूम धाम से करैला । आप बरात खूब सजधज कर ल्याजो । उणाके घराणां मैं पहली भी विवाह कुल नामी हुया है । ब्याव आंवत का वैशाख में कर देवांला ।

धनी०—ठीक महाराज, आप फरमाओ सोई करस्यां, आपां भी ब्याह इसो करां कि कदेही हुयो, न अब होवै, आखो जयपुर जाणै है । हमारे भी कार सदा ही नामी हुया छै । आप ई बात की चिंता मत करो ।

मिथ्या०—आछो तो आज्ञा हो ।

धनी०—पधारेंगे । देखो हरभांत कर-कर बात गळै उतार दीज्यो, आप पंडित छो, सब बात जाणो छो ।

मिथ्या०-आछो ( जाते हुए ) अरे किसना ! लै भाई काम तो बणगयो है, आज तो देखो आपां घरां सूं उपदा सुगन मनाकर निकल्या हा, काम फते हो गयो। अब सेठ शोभारामजी मानै जदां है। पण देख ई बात की कठैही चरचा मत करजे नहीं तो बण्यो बणायो काम बिगड़ जावेलो।

किसना-सेठ शोभारामजी तो मानमून जासी "नक़द नाणा और बींद परणै काणां" थैली देखतां हीं ऊंदरो ऊंदरो राजी होजासी। पण महाराज देखो आदूंआद को मामलो है।

मिथ्या०-हारे हां, ईमें कांई शक है ?

किसना-महाराज सेठ धनीराम की जन्मपत्री तो लेली होती।

मिथ्या०-( हां ) भाई वा तो पहली ही लेली। दूसरी बणानी पड़सी, सो देखो रामजी "सब बेड़ो पार करसी"।

( जाते हैं )

# तृतीय अङ्क, दृश्य ३.

## शोभाराम की हवेली ।

( प्रवेश शोभाराम और फसादीलाल )

शोभा०—बेटा, अब तू कुछ टाबर नहीं है । बुरी संगत छोड़ दे । देख ! गांजो, भांग पीवो आछो नहीं है । पछै पछतावेलो, कह्यो मान लै ।

फसादी०—हां ! आप पंडितजी बैंगन खावै और दूसरों को परमोद बतावै । थें टाबर हा जदां तो काई नहीं कराहाक ? मनै तो आप गाली देवा सूं मना करो हो, परन्तु थे खुद तो काल ही भांग पीकर नशा में, अभंड, गाल्यां काडे हा ! थोड़ा दिनां पहिली थे खुद कवे हा कि, मैं बालकपणा में बहुत बिगड़ गयो हो । किसी की कुछ नहीं मानतो हो । अब जद काई मैं कुछ करूं तो थे मना करो, जद थे खुद इस्यान करे हा, तो मैं क्यूं नहीं करूं । मैं थां का कहवा सूं अपनी आदत नहीं छोडूं ।

शोभा०—हे बेटा, तू म्हारे वास्ते तो कहवे है, परन्तु थ्यां बुरी आदतां सूं अब मैं घणो दुःख पारह्यो हूं । थारा ब्याह में अनाप शनाप रुपयो खर्च करयो, सट्टा, फाटका में, खेल तमाशा में, रुपयो उड़ायो और बाकी रह्यो सह्यो अबकै चांदी का सोदा में लाग गयो । धन तो बाप को कमायो यान लाग गयो और तू इस्यान दुःख देवै है । हा ! राम ! मैं तो देख थारा ही भला कै वास्ते कहूं हूं पछै थारी मरजी, सुधर चाहे बिगड़ !

फसादी०—( गुस्से से ) बस बस रहवा दो, थे ज़ियादा म्हारे साथ गड़बड़ मत करो। जो इस्यान ही है तो थे थांकै और म्हे म्हांकै। ( जाता है )

( प्रवेश लाला ज्ञानचंद )

ज्ञान०—क्या है सेठ शोभारामजी, आज कुँवर फसादी-लाल से किस बात पर उलझ गये ?

शोभा०—लालाजी, मैं इणांने बचपण से प्यार करकर, खिला पिला कर मोटो करयो, पाठशाला में भी पढ़बा वास्ते इणांने नहीं भेज्यो, कदास इणांने उठै तकलीफ़ होसी। अब ओ खोटी संगत में पड़कर सब धन की धूल उड़ाया नाखे है, मना करूं तो उलटो सामनो करै है।

ज्ञान०—( आपही आप ) तो फिर इस लड़के का क्या दोष है ?

ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारै उजियारो करै, बढ़ै अंधेरो होय॥

(प्रगट) सेठजी, आपने इसको लाड़ प्यार में रक्खा और विद्या न पढ़ाई यह सब उसी का फल है।

लाड़न में बहुत दोष हैं, ताड़न में बहुत गुण हैं, इसलिये पुत्र और शिष्य को ताड़ना करे, लाड़ में बिगड़ने न दे।

लाड़ने बहवो दोषास्ताड़ने बहवो गुणाः।
तस्मात् पुत्रं च शिष्यञ्च ताड़येन्नतु लालयेत्॥

अंध पंगु कूबर बहिर, अरु गूंगा सुत होउ।
मूरख पुत्र न देय विधि, यह मति शास्त्र निचोउ

शोभा०—लालाजी, बचपन में म्हारे सामैं बोले हो तो मैं बालक जाणकर हंस देतो, परन्तु अबतो ओ बड़ो होगयो, अबतो ईंनै कुछ समझणो चाहिजे, परन्तु म्हारा भाग फूट गया, ओ तो इस्यान पडुत्तर करै है।

ज्ञान०—(आपही आप) बुराइयां सिखाने में तो खुद गुरू बन गया, अब रोरहा है।

(प्रगट) देखो सेठजी, छोटा वृक्ष टेढ़ा न हो, ऐसा उपाय पहिले ही से करना उचित था।

अब पछिताये क्या होवे, जब चिड़ियां चुगगईं खेत।

शोभा०—ईंकी बालक अवस्था में, मैं ईंनै, त्रास काईं वस्तु है? सो जाणबा भी नहीं दीन्हीं और न दूसरा ने जणाई अब ईंको उलटो फल देवै है।

ज्ञान०—सेठसाहब, अच्छा फल कैसे हो, शास्त्र में कहा है—

हयं च शिष्यं सुतवल्लभानाम्, त्रासं विना नैव गुणात्रपन्ति।
यथा मृदंगो वनकाष्ठचर्म्मो, करेण हन्यात् मधुरं वदन्ति॥

अर्थात् घोड़ा, पुत्र, शिष्य तथा स्त्री, ये चारों त्रास विना गुण ग्रहण नहीं करते हैं। जिस प्रकार बन में पड़ी हुई लकड़ी की गांठ को लाकर, उसको भीतर से कुचर कर ऊपर चमड़ा मढ़कर पीछे जब थाप मारी जावी है, तो कैसा मधुर स्वर निकलता है। इस प्रकार जो आप अपने पुत्र के लिये पहिले ही से दूध और दण्ड दोनों योग्य समय पर काम में लाये होते तो आज आपको इस प्रकार पछताने का समय नहीं मिलता। "बोये पेड़ बंबूल के आम कहां से होय"।

## तृतीय अङ्क, दृश्य ४.

### स्थान जयपुर ।

*( रामनिवास बाग़ में टहलते हुए )*

विद्यासागर–ओ हो ! मित्र बुद्धिसागर (गले मिलकर) आप पूना से कब पधारे ?

बुद्धिसागर–हे मित्र ! मैं कल ही संध्या को आया हूं ।

विद्या०–( हां ) आप ने कृषिविश्वविद्यालय पूना में क्या क्या बातें विशेष कर पढ़ीं, कुछ वहां का संक्षेप वृत्तान्त तो सुनाइये ।

बुद्धि०–हां मित्र, हमारे विद्यालय में विशेष कर वैज्ञानिक नियम पर कृषिविद्या की शिक्षा दीजाती है । खेत जोतना, बीज बोना, खाद बनना, इत्यादि सब बातें नवीन शंशोधित नियमों पर अध्ययन कराई जाती हैं । अर्थात् रसायन विद्या के द्वारा उत्पन्न हुई वस्तुओं के तत्व, निश्चय कर के उन्हीं तत्वों की खाद डाल कर एक वर्ष में बहुधा तीन वार फसल पैदा करते हैं और फिर भी धरती बंजर नहीं होने पाती । और आश्चर्य यह है कि यूरोपियन प्रोफेसर ( स्वयं ) यह काम करके लड़कों को बतलाते हैं । कुछ समय हुआ, हमारे यहां की उपजी हुई रुई डेढ़ रुपये सेर अमेरिका में बेची गई थी । रुई बड़ी मुलायम और रेशेदार थी । दरख़्तों का क़लम करना, पैबन्द लगाना, पोधे को सम्मलित करके नये पोधे उत्पन्न करना इत्यादि बहुतसी दिलचस्प और उपयोगी बातें बतलाई जाती हैं ।

विद्या०—समय का कैसा फेर है या तो वह समय था कि रोम और यूनान के लोग विद्या पढ़ने के हेतु भारतवर्ष में आकर हमसे पढ़ते थे या यह समय आगया है कि हमारी प्राचीन पीढ़ियों की विद्या को भी पढ़ने के लिये हमें दूसरे देशों में जाना पड़ता है या वहां के आये हुये लोगों का मुंह देखना पड़ता है। संस्कृत, जोतिष, न्याय, व्याकरण, खगोल, इतिहास, गणित इत्यादि विद्यायें या तो हम दूसरों को पढ़ाते थे या अब यह सब विद्यायें सीखने के लिये भारतवर्ष ग़ैरों का मुहताज है।

बुद्धि०—हां, यही बात है। जिस प्रकार मनुष्य का मस्तिष्क बिगड़ जाने पर वह पराधीन होजाता है, स्वयं कुछ नहीं कर सकता, शरीर की शुद्धि नहीं रहती और बावला हो जाता है, इसी तरह क़ौम का हाल है। हिन्दू क़ौम का मस्तिष्क ( अर्थात् ब्राह्मण जाति ) जब बिगड़ गई तो भारतवर्ष की ऐसी दुर्दशा होना क्या अचरज की बात है?

विद्या०—हे मित्र,

एक दिन वह था कि बल विद्या में हम भरपूर थे।
और दौलत मंद भी सब देशों में मशहूर थे॥
सब हमें झुकते थे वो मातहत आप हजूर थे।
जो वचन कहते थे मुख से सब तरह मंजूर थे॥

कैसे कैसे शूर विद्वान और दानी हुए।
हमसरी क्या कोई कर सकै कि लासानी हुए॥
जिनके वश में देवता तक अग्नि और पानी हुए।
परन्तु अब कुछ नहीं गो हम कैसे ही मानी हुए॥

हा! यह काल कैसा प्रबल है, तमाम संसार इसके चक्र में फंस रहा है, प्रत्येक जाति समय समय पर अपनी उन्नति के शिखर पर पहुंची और गिरी। तुर्की, मिश्र, स्थान रोम, यूनान, स्पेन, पुर्तगाल, हालैंड, बेलजियम, सब देश प्राचीन समय में बारी बारी से प्रसिद्ध हो चुके हैं, परन्तु भारतवर्ष तो गिरकर फिर चेता ही नहीं है और न जातीयभेद व अन्य सामाजिक शीघ्र चेतने की कुछ आशा है। हे मित्र!

धीरपुरुषों का यही है, नियम धीरज धारना।
धर्म अपने मन में रखना, औ न हिम्मत हारना॥
सब्र करना और दशा बिगड़ी को नित्य सुधारना।
सत्यमार्ग से कभी मनको न अपने टारना॥

विद्या०—यह तो आपने बहुत ठीक कहा, परन्तु कहांतक धीरज धारें। देखो हमारे यहां अविद्यादेवी का अटल राज्य, अनगिनत धर्म प्रणालियां, असीम वर्णभेद, आपस की फूट और अपार जातिकुरीतियां। क्या यह सम्भव है कि दो चार शताब्दी में इनका मुंह काला हो और भारतवर्ष सुधरे। कोई आशा नहीं है।

बुद्धि०—हे मित्र, ऐसे निपट निराश मत हो। समय कुछ बदलता जाता है। हमारी न्यायशीला अंग्रेज़ सरकार के यहां होने के बाद, उन्नति के चिन्ह प्रत्येक प्रांत में—तमाम भारतवर्ष में प्रकट हो रहे हैं। इनकी कृपा से ठौर ठौर विद्यालय खुल गये हैं। हुनर और कारीगरी में ही नहीं, बल्कि सब ओर उन्नति ही उन्नति दीख पड़ती है। जगह २ जाति-सभामें कमेटियां हो रही हैं। देशी वस्तुओं का प्रचार बढ़ता

जाता है। और फिर बढ़ाने के हित ठौर ठौर प्रदर्शनियां की जा रही हैं। मैं कह सकता हूं कि यदि एक देशी वस्तुओं का ही प्रचार भारत में होजाय, जैसा कि सरकार की प्रदर्शनी करने से मन्शा है, तो भारत की बड़ी उन्नति हो।

विद्या०—हे मित्र, एक देशी चीज़ों के प्रचार से केवल क्या हो सकता है जबतक जातिसुधार न हो, कुछ भी नहीं हो सकता। धन्य हैं वे महापुरुष जिनका जीवन जातिसुधार मे व्यतीत होता है।

सजातो येन जातेन, याति वंशःसमुन्नतिम्।

परिवर्त्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते॥

हमारे रस्म रिवाज हमको दिन दिन दरिद्री और निर्बल किये जा रहे हैं।

बुद्धि०—इसमें कुछ संदेह नहीं कि पहिले जाति का सुधार होना अति आवश्यक है, परन्तु देशी चीज़ों का प्रचार हो जाना भी कुछ कम उन्नति नहीं है, संसार के सब देशों ने इसीसे उन्नति की है।

देशोन्नति किस प्रकार होवे, जब इसपर किया गया विचार।
निश्चय हुआ बड़ा ज़रिया है, देशी चीज़ों का परचार॥
अमरीका, इंगलैंड, जर्मनी, आस्ट्रेलिया और जापान,
कैसे हुई तरक्की उनकी, सब इस ओर धरें हैं ध्यान।
उन्हें साफ मालूम होत है, जिन्हें ज़रा भी है कुछ ज्ञान,
देशी चीज़ें लावें काम में, उन्हीं का सबने किया विचार।
निश्चय हुआ बड़ा ज़रिया है, देशी चीज़ों का परचार॥ १॥
हे भारत के सुपात्र पुत्रो, ज़रा तो हिम्मत दिखलाओ,

भारत की इस हीनदशा पर, कुछ तो आप तरस खाओ।
बहुत दिनों ग़फ़लत में सोये, अबतो होश में आजाओ,
किस्ती बीचों बीच डूब रही, इसे किनारे पहुंचाओ॥
देशभक्ति का सहारा देकर, शीघ्र लगाओ परली पार।
निश्चय हुआ बड़ा ज़रिया है देशी चीज़ों का परचार॥ २॥
अगर मुल्क से कुछ भी हित है अगर पुरुष कहलाना है,
अगर नीमवहशी का धब्बा अपने सिर से हटाना है।
अगर बुज़ुर्गों की शोहरत को, पहिली सी चमकाना है,
रामलक्ष्मण हरिश्चन्द्र की इज्ज़त फिर भी पाना है॥
तो ऐसे बनो देशभक्त, जिन्हें देख चकित होवे संसार।
निश्चय हुवा बड़ा ज़रिया है, देशी चीज़ों का परचार॥ ३॥
देशहितैषी सज्जन पुरुषो, अब तो ग़फ़लत को छोड़ो,
अय्याशी सुस्ती खुदगर्ज़ी, पक्षपात से मुंह मोड़ो।
जो भद्दी रस्में पड़ गई हैं, उनको मिलकर के तोड़ो,
जो आपस में निफ़ाक़ पड़ रहे, उन्हें छोड़ रिस्ता जोड़ो॥
करके मेल जोल आपस में, अपने देश का करो सुधार।
निश्चय हुआ बड़ा ज़रिया है, देशी चीज़ों का परचार॥ ४॥
देखें कौन कौन धरता है, भारत की दुर्दशा पर ध्यान,
देखें कौन कौन सुनता है, मेरी अरज़ को धरके कान।
देखें कौन कौन करता है, देश पर तन मन धन कुरबान,
देखें कौन कौन निकलें हैं जैसे हैं अहले जापान॥
जिन्होंने अपने देश पर सभी कुछ दिया है वार।
निश्चय हुवा बड़ा ज़रिया है देशी चीज़ों का परचार॥ ५॥

विद्या०—निस्सन्देह स्वदेशी वस्तुप्रचार एक उन्नति का उत्तम द्वारा है।

बुद्धि०—इसके अतिरिक्त प्राचीन समय के इतिहास पढ़ने और वर्तमान काल में अन्य देशों का वृत्तान्त सविचार देखने

से प्रतीत होता है कि जब और जहां जहां किसी देश और उसके निवासियों ने उन्नति की है तो सब ने अपने देश की कारीगरी और कलाकौशल को उन्नति देने और अपने देश की बनी हुई वस्तुओं को अन्य देशों में लेजाकर बेचने ही से की है। भारतवर्ष गिरा है सो भी इन्हीं बातों की हानि से गिरा है। और यदि फिर उठ सकता है तो इन के बढ़ने ही पर उठ सकता है।

विद्या०—यह तो ठीक है, परन्तु यहँ तो देखिये दस्तकारी को भारत निवासियों ने ऐसा कुकर्म समझ रक्खा है कि सुनार, लोहार, मोची इत्यादि जितने भी कारीगर हैं सब शूद्र समझे जाते हैं और इनसे मिलने, जुलने और बात चीत करने तक में लोग अपना निरादर समझते हैं, तमाम कारीगरी बहुधा अशिक्षित मनुष्यों के हाथ में होने से उन्नत होने की ठौर मिटियामेट होगई है।

बुद्धि०—हां ठीक है, परन्तु अब यह समय नहीं रहा। इससे देशवस्तु के प्रचार ने सब कारीगरों का ऐसा आदर बढ़ा दिया है और अब अपने हाथ से चांदी सोने का आभूषण और लकड़ी इत्यादि के कार्य करने से कोई मनुष्य पतित नहीं होता है न लोहे के बर्तन बनाकर बल्कि न चमड़े का काम करने में जाति जाती है, सच तो यह है कि मनुष्य का सत्कार और आदर उसके उपयोगी कार्य से है न कि धनाढ्य और उत्तम जाति में उत्पन्न होने से। ( जाते हैं )

## तृतीय अङ्क, दृश्य ५.

### स्थान शोभाराम की दुकान।

*( प्रवेश पण्डित मिथ्यानन्द, किशना और सेठ शोभाराम )*

शोभाराम–पण्डितजी महाराज, दिन बहुत लाग गया, कांई काम भी बण्यो के नहीं ?

मिथ्यानन्द–काम बणाबा में आप कांई शक जाण्यो ? म्हे भी तो आखिर पण्डित हां, थोड़ा पढ्या तो कांई हुयो, सगाई पताई करबा को काम तो म्हांका बाप दादा सूं तो म्हांको चल्यो आरह्यो है। इणां का कर आबा में कांई संदेह है।

शोभा०–कांई कर आया ?

मिथ्या०–कांई कर आया? आप को काम बणाय दीनो है। सेठ धनीरामजी जयपुरवाला सैं सगाई थमगई है, लड़को क्यूंक उमर में ज्यादा है, परन्तु कांई हरकत छै। आपणै बाई रूपवती दोवड़ा हाडां छै, रोड़ी का धन नै बढ़तां कांई देर लागै है ? काल बड़ी होजासी। छोटो लड़को आज-कल मिलणो मुश्किल है फेर आपनै ई तंगातोषी मैं कीं मदद पहुंच जासी। या तो हुंडी मांगनै रखावो।

शोभा०–पण्डितजी, मैं आपको गुण जन्म ताईं नहीं भूलूं, परन्तु कीनेहीं मालूम नहीं होजाय, मारी इज्जत में बट्टो लाग जावै लो।

मिथ्या०-( आप से आप ) काई पाप को घड़ो फूट्यां बिना रहसी ? ।

( प्रगट ) आप काई फिकर मत करो एक बात है विवाह जल्दी ही करणो पड़ेलो ।

शोभा०-ठीक, आछो पधारो ( आप से आप ) लड़की पर रुपयो लेबो है तो बुरो, पर काई करां खर्च तो करणो ही पड़े, नहीं तो सब ही लोगं नाक काटै, परन्तु लेबा की काई मालूम पड़बा देवां हां । ( जाते हैं )



## तृतीय अङ्क, दृश्य ६.

(प्रवेश लाला धनीराम, छदम्मीलाल, मुफ़्तीप्रसाद और कोताह अंदेश)

धनीराम–भाई छदम्मीलालजी, आपकी कृपा से सगपण तो हो गयो, बड़ी चिंता लाग रही छी। रामजी बेड़ो पार करयो, सेठ शोभाराम अजमेरवालां की लड़की से हुयो है, रक़म तो लागी परंतु खैर, काम बण गयो। अब ब्याह की तय्यारी करणी ज़रूर है। जिमणार की न्यात करणी, बरात के वास्तै लोगां नै तय्यार करवाणां, आजकाल जयपुर से बरात निकलबो कीं आसान काम नहीं है। दश दश दफै फिरो तो भी लोग घर सूं बारैं निकलै नहीं। फिरता फिरता पग दूख चालै, खुशामद करता करता हैरान होजावां, परंतु आपकी किरपा से आपा नै आ दिक्क़त जाणां सो नहीं होसी। रंडी बुलवाणी ज़रूरी है, धन तो चाहे जितरो लागो, शोभा में कांई कमी नहीं होवे।

हमरे खर्च की चिंता नाहीं, शोभा अधिक होय जग माहीं॥

छदम्मीलाल–सेठसाहब, ब्याह की तैयारी तो ज़रूर जल्दी ही होणी चाहिजे, बरात में एक हज़ार आदम्यां सूं कम कांई ले चालां। पांचसौ छैसौ तो आजकाल मामूली आदमी ही लेजावै है। आप का बडेरा तो ब्याह इस्या करया कि तमाम जयपुर को चोखलो जाणै है, आप खुद ही आज तक कार इस्या उस्या नहीं करया। रही रंडी का बुलावा की सो तो यां मंगला-मुख्यां बिना तो ब्याह ही सब फीको है।

बरात में आदमी जावै तो आप जाणो हंसी दिल्लगी के वास्ते तो जावे ही है। रंडी तो जोधपुर में है, काली हुसैनी (बुलबुल) को जोड़ो आणो चाहिजे, सो लोग देख कर लोटपोट होजाय।

मुफ्तीप्रसाद–अजी रंडी को जोड़ो तो बस वोही है। नज़ाकत और खूबसूरती बस उणां तले है। आप फरमाओ तो मैं जोधपुर जाकर रंड्यां बुलाय लाऊं।

कोताह अंदेश–आप को ब्याह अब कोई बार बार थोड़ो ही होवै है। यह तो वक्त का ही मजा है, जित्ती शोभा लेणी हो सो लेल्यो पछै काई है "आप मरयां जग परलय" नाम रह जासी। आ रांड़ दौलत काई साथ जावै है, सब अठै ही पड़ी रह जासी।

धनी०–हां जी, खाय और ख़र्च कर मन का अरमान नहीं निकाले तो पछै काई? भाई छदम्मीलालजी, आप पंचानै भेला कराकर न्यात की परवानगी लेल्यो। देखो ई बात की पूरी चिंता राखज्यो काई आपणां दुशमणां को डाव न लाग जाय, न्यात हुयां बिना मजो ही जातो रहैलो। आज काल लोग न्यात करबा में बाधा घणी डालबा लाग गया है और पंच भी मूंडेदेखी बात करै है।

आज काल का पंच सब करै पच्छ की बात।
सांचो न्याव चुकावणों फेर न रहवै हाथ॥
पाछै सूं भेला होवै, मांचै खैंचाताण।
धन देखे मन में डरैं होय किस तरह छाण॥

परथम तो मरजाद नहीं, नहीं जाजम की काण ।
मन में आवै ज्यूं बकै, जो कुछ हूकै ध्यान ।
एक ज़रासी बात पर, खोवै रातां चार ।
सांच झूंठ को कुछ ज़रा, नहीं नीकसे सार ॥

छद्मी०—अजी ई बात को आप कोई फ़िकर मत करो । मैं पहली स्यूं ही दश बीस आदमी आपणा कर राख्या है । ओ काम तो बण्यों ही समझो ।

कोताह अंदेश—मेरी राय है कि आपां सब जणां पंचायती की वक्त चौधरी के चारूं तरफ़ बैठ जावां और परवानगी को मामलो पेश होता हीं सब जणां एक दम ज़ोर सूं बोलकर वीं वक्त मञ्जूरी करवा ल्यां ।

मुफ़्ती०—हां, आ बात तो म्हारे भी गलै उतरी, चौधरीजी के काना वारें पहिली ही काढ़ लेस्यां । धनीरामजी, और काम को फिकर करो ओ काम तो म्हें करलेस्यां ।

धनी०—और काम ? ( सोच कर ) अंगरेजी बाजो तो बाईस रुपियां रोज पर बीकानेर का रसाला को मंगवा लीनो है । आतिशबाजी, बागवाड़ी, फुलवाड़ी वगैरः को नमूनो देख कर तैयार करवा को हुकुम दे दियो है । रही रंड्यां सो मुफ्तीप्रसादजी, आप जोधपुर पधार कर च्यान हो च्यान ले आओ । बाकी काम आप सब साहबां कै भरोसे छै ।

सब—सब होजासी, आप कोई चिंता मत करो ।

( सब जाते हैं )

## चतुर्थ अङ्क, दृश्य १।

स्थान जयपुर।

( प्रवेश दो बातूनी )

पहिला–अरे भाई सुणी भी ? आज तो शहर में सेठ धनीराम की जिमनार की न्यात की बड़ी चरचा हो रही है।

दूसरा–क्यों ? काई हुयो ?

पहिला-काई हुयो लुगायां भूखी ऊठ गई।

दूसरा–( आश्चर्य से ) ओ हो ? क्यों प्रबन्ध ठीक कोनी हो काई ?

पहिला–हां, लुगायां ने जिमाबा को प्रबन्ध ठीक कोनी हुयो। यूं तो कोई दोसौ आदमी पुरसबा वाळा हा, परन्तु आप जाणो हो, आपणां भाई तो उठै लुगायां ने देखबा जावै है, छाबड़ी लेकर खड़ा हो जाय और लुगायां सूं बातां करबो करै या आपका घरकी लुगायां ने पुरस दे और खड़ा रहै।

दूसरा–मारवाड़ी घसपस तो मशहूर है न, पछै काई हुयो ?

पहिला–लुगायां कै कोई कै पुरसगारी आई कोई कै नहीं आई, अनाप शनाप झूठ छोड़ गई और कोई भूखी भी ऊठ गई। हा हू मच गई, कितरी लुगायां का कपड़ा चिंथ गया, कीचड़ में बिगड़ गया, गाल्यां देती गई। कुछ दाल में लूण भी कम बतावै है।

दूसरा–भाई बिचारो, न्यात करबा वालो काई करै।

अगर फालतू आदम्यां नै फिरबा सूं रोकै तो बुरी। लुगायां ने तरकीब सूं बिठावै तो लुगायां मानै नहीं। पुरसबा वाळा नै कुछ कहे सुणे तो फौरन इज्ज़त बिगाड़ काढ़े, कवै "एक रांड थारे ही घरां अणूती न्यांत हुई सो म्हांने पुरसबा सूं मना करै। लुगायां जीमकर न उठै जदतांई घरधणी की जान आफत में रह्या करै है। बिचारा अग्रवालसभा वाळा तो कह्यो कि पुरसबा को बन्दोवस्त म्हांको रहबाद्यो, पण सेठ धनीरामजी एक नहीं सुणी।

पहिला—देखो सेठ धनीरामजी भी बुढ़ापा में विवाह कर धोळा भड़कावै है।

दूसरा—आपणां मारवाड़ी समाज मैं तो ओही हाल है, एक काई बीसों ब्याह बुढापा का होवै है। मारवाड़्यां में इत्ती बेवा लुगायां है, ईंको और काई सबब है ? जिणां कनै थैली होवै वह तो दो वार परणल्यो, च्यार वार परणल्यो और थैली न हो तो कंवारा ही फिरो।

पहिला—हां, बात तो सही है, परन्तु अब तो लोगां ने कुछ शरम तो आबा लाग गई। अकूसर इस्या ब्याह लोग छोटा गांव में जाकर छानै चुपकै ही कर ल्यावै है।

दूसरा—काई खाक शरम आवै है। ब्याह की बख़त बनड़ा वणजावै, देखोः—

बुढ़ापे की अवस्था में ब्याह अपना कराते हैं।
वह एक मासूम कन्या को मुसीबत में फँसाते हैं॥
नहीं मालूम इन बुड्ढे बुजुर्गों को यह क्या सूझा।
कि जो मरते समय अपना अनोखा ब्याह कराते हैं॥

कंपे तन और हिले गर्दन नहीं हैं दांत तक मुंह में।
मगर देखो तो बुड्ढजी फबन कैसी दिखाते हैं॥
जड़ें सुर्मा मलैं उबटन कटा कर मूछ और डाढी।
बरस पंद्रा या सोलह का यह अपने को बनाते हैं॥
नहीं आती शरम उनको ज़रा नौशा कहाने में।
न जाने कौनसी उम्मीद पर कंगना बँधाते हैं॥
बहत्तर साल के हैं खुद बदौलत दश की है कन्या।
नहीं बुड्ढे मियां इस जोड़ पर दिल में लजाते हैं॥
महीना दो महीना बाद ही वह पीरे नाबालिग़।
हमेशा के लिये मरघट में जा डेरा जमाते हैं॥
मजे से आप तो जाकर चिता में लेट जाते हैं।
मगर ताज़िन्दगी कन्या विचारी को रुलाते हैं॥
टके के लोभ से पंडितजी भी झट खोल पत्रे को।
बिला सोचे बिचारे बेतुका साहा सुझाते हैं॥
उमर भर जान को रोती है उन मिश्रों की यह बेवा।
कि जिनके साथ में बुड्ढों के वह फेरे कराते हैं॥
समझलें खूब यह मन में मियां बुड्ढे व पण्डितजी।
कभी वह सुख नहीं पाते जो औरों को सताते हैं॥
तअज्जुब है कि जो रोके उन्हें इस फेले बेजा से।
सनातनधर्म का उसको महा शत्रू बताते हैं॥

पहिला—यह तो आपने ठीक कहा, परन्तु यह बुड्ढे आंख के अंधे गांठ के पूरे ऐसी बातों को सुनते थोड़ ही हैं, इनकी बुद्धि पर तो पत्थर पड़ गये हैं इनकी, बुद्धि विपरीत हो रही है। यदि यह समझ जावैं तो फिर भारत ग़ारत क्यों हो। (जाते हैं)

## चतुर्थ अङ्क, दृश्य २.

### स्थान अजमेर।

( *प्रवेश शोभाराम, चम्पतराय, घमंडीप्रसाद, फटकविहारी आदि* )

शोभाराम–भाई चम्पतरायजी, ब्याह की मिती नियत हो गई है, पावणां पई आगया है, ब्याह की तय्यारी में आप मदद दिराओ, आपणै फसादीलाल को तो ब्याह कर ही दीनो, अब ओही आखरी काम है ईने पार उतारो।

चम्पतराय–लाला शोभारामजी, आप कांई सोच मत करो सब प्रबन्ध हो जासी, बरात का उतरबा को बन्दोवस्त तो आपणां नोहरा में होजासी, सब कर लेस्यां।

शोभा०–समधी लिखी है कि कम से कम एक हज़ार आदमी बरात में आवेला सो बन्दोबस्त कराज्यो। आप नै मालूम है ई ब्याह में थोड़ा सूं थोड़ा पन्दरह हज़ार रुपिया लागैला, आगला बड़ेरा तो घणा ही लगाया, परन्तु वक्त देखजे। दो हवेली और एक दुकान गिरवी रखकर और सब मिलाकर बारह हज़ार को तो बन्दोवस्त हो गयो है, बाक़ी कुछ आप मदद कराओ तो काम पार पड़जाय।

चम्पत०–भाईसाहब, आज काल तो रुपियां का दर्शन ही कोनी होवे, अबार तो आप काम चलाओ फेर देखी जासी।

घमंडी०–अजी रुपियां को बन्दोवस्त तो फिलहाल मैं

कराय देस्यूं ब्याह पछैं आप लोटा दीजो। ब्याज सूं लेणां जीं को नाम काई ?

शोभा०—देखो कुलवई काम कर लीजो कीनै ही मालूम न हो जाय।

घमंडी०--ठीक है, आप काई चिन्ता मत करो।

शोभा०—देखो भाई घमंडीलालजी ओ आपणो आखरी काम है। ईंमे कीं तरह की कमी न हो जो कोई कमी रहगई तो आगला करयां पर पाणी फिर जावे लो।

घमंडी०—कमी कीं बात की ? ऊखल में माथो दियो पछै काई धमका सूं डरनो है। कार तो सब उम्दा ही होणो चाहिजे। पछै कमा कमा कर देवो करस्यां, आप जाणो हो। अगर इस्या मोका पर ही रुपयो नहीं लगावां तो इत्ता कमावां ही कीं वास्तै हां। अजी पेट तो कीड़ी मकोड़ी ही भर लेवे है। ( जाते हैं )

## चतुर्थ अङ्क, दृश्य १.

( प्रवेश सेठ विवेकानंद और पंडित सुधाकर द्विवेदी )

विवेकानंद–प्रणाम पंडितजी महाराज! पधारिये, पधारिये, आज हमारा अहोभाग्य है कि घर बैठे आपके दर्शन हुए। कई दिनों से आपके दर्शनों की आकांक्षा थी, परन्तु विशेष कार्य्य-वश नहीं मिल सका।

"उत्तम जनसों मिलत ही, अवगुन हूं गुण होय।
घन संग खारे उदधि मिल, बरसे मीठो तोय" ॥

पंडित सुधाकर–स्वस्ति भवतु। चिरंजीव रहो लाला विवेकानन्द, धर्मलाभ हो। कहिये आप कुशल तो हैं?

विवेकानन्द–हां महाराज, आप विद्वान् महात्माओं की अटल कृपा से सब प्रकार का आनंद है। चिरंजीव बुद्धिसागर कृषिविश्वविद्यालय पूना की परीक्षा में सफल होकर लौट आया है। अजमेर से लाला ज्ञानचंदजी का पत्र आया है, आप लिखते हैं कि हमारी कन्या विद्यावती का सम्बन्ध आपके सुपुत्र बुद्धिसागर से कर लें और विवाह का शुभ दिन नियत करके समाचार दें सो उचित प्रबंध किया जाय। महाराज, सम्बन्ध की बातचीत तो पहिले ही हो चुकी थी। बुद्धिसागर से भी मैंने पूछलिया था। अब वह विवाह करने पर सहमत है। उसकी आयु भी अब पच्चीस की हो गई है, आपकी इसमें क्या सम्मति है?

पं० सुधा०—बड़े आनन्द की बात है, लाला ज्ञानचन्द एक बड़े प्रसिद्ध विद्वान् चतुर और बुद्धिमान् पुरुष हैं। ऐसे सज्जन के साथ सम्बन्ध बांधना बड़ी चतुराई का काम है। क्योंकि—

पहिले लखि के दोष गुण, फेर अरम्भे काज।
जाते दुःख न होय मन, लहै न जग में लाज॥

और कन्या भी उनकी पढ़ी लिखी सुन्दर और चतुर बतलाते हैं, यह सम्बन्ध आपके कुल योग्य है और लाला ज्ञानचन्द बड़े योग्य पुरुष हैं।

तुलसी कबहुं न त्यागिये, अपने कुल की रीत।
लायक ही सूं कीजिये, ब्याह वैर और प्रीत॥

विवाह का दिन आपके अवकाश पर निर्भर है, जब चाहें शुभ लग्न निकाल कर पत्र पीछा भिजवा दें। मेरी सम्मति में तो अब विवाह करना उचित है। जब आपका सुपुत्र पढ़ लिख कर गृहस्थ के आनन्द भोगने योग्य हो गया तो अब विलम्ब क्यों कीजाय। शास्त्र की आज्ञा है कि मनुष्य पच्चीस वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य रखकर गृहस्थाश्रम में घुस सकता है।

विवे०—जो आज्ञा महाराज! आपसे यह भी सम्मति लेनी है कि विवाह में व्यय किस प्रकार होना चाहिये। बरात में कितने सज्जनों को सुभीते से ले चल सकते हैं और यहां पर मित्रों और सम्बन्धियों के भोजन का क्या प्रबन्ध किया जाय, इत्यादि।

पं० सुधा०–आपतो स्वयं बुद्धिमान् हैं। मारवाड़ी समाज की अनुचित व्यय से जो दुर्दशा हो रही है वह आपसे गुप्त नहीं है। केवल मारवाड़ी समाज ही क्या सर्व देश अनुचित व्यय से रसातल को जा रहा है। यह लोग विवाह संस्कार में, जो वास्तव में विवाह है, एक चार छटांक घी से हवन करके अपने को द्विज कहते हैं, परन्तु अनुचित व्यवहारों में सहस्रों मुद्रा आंख पर पट्टी बांधकर व्यय करते हैं और सर्वथा नहीं लजाते।

आपको भलीभांति विदित है कि इस अनुचित व्यय से बड़े बड़े कुल बिगड़ गये। बड़े बड़े धनाढ्य कङ्गाल हो गये, आदर सनमान मिट्टी में मिल गया, देश कङ्गाल हो गया। इसलिये मेरी सम्मति में कोई भी पैसा वृथा न गमाया जाय और बरात में केवल उतने ही सज्जनों को ले चलें, जितने का प्रबन्ध भलीभांति हो सकता हो। रही-यहां के भोजन की सो आपके उत्तम प्रबन्ध पर निर्भर है। इस कार्य में यहां की वैश्यसभा के नवयुवक महाशयों से सहायता ली जाय।

विवे०–जो आज्ञा, आपकी सम्मति अनुसार सर्व कार्य्य किया जावेगा, मुझको तो आप जैसे विद्वान् सच्चे हितैषी श्रीमानों का कथन ही माननीय है।

पं० सुधा०–आज्ञा हो।

विवे०–पधारेंगे? ( जाते हैं )

वास्तव में मारवाड़ी समाज की दशा शोचनीय है। इस जाति के कुछ ढंग ही निराले हैं। लड़कियों के बेचने की

कुरीति इनमें, अनमेल विवाह का रिवाज इनमें, लड़के लड़कियों को विद्या यह नहीं पढ़ाते, बेहद फ़िजूलखर्ची करते हैं, अपनी जाति की बेवा स्त्रियों और अनाथ बालकों का यह कुछ प्रबन्ध नहीं करते, फूट इन में, आगे साल हज़ारों मुक़द्दमे आपस में लड़ते हैं, एक क्या सैकड़ों कुरीतियां मनमानी प्रचलित करदी हैं। शायद भारतवर्ष में मारवाड़ी समाज जैसी तो कोई जाति गिरी नहीं होगी। ( जाते हैं )

## चतुर्थ अङ्क, दृश्य ४.

( प्रवेश शिताबी और छज्जूखां )

शिताबी—अहा, हा, हा ! ओ हो, हो, हो ! अहें, हें, हें ! ( हंसता ही चला जाता है ) आज तो बड़े मूंजी को मारा, मारा क्या, चित्त ही कर डाला। अरे छज्जू मियां ! यार आज तो काम बन गया।

छ०—अरे भाई, क्या काम बन गया। कहो तो सही। ( आपही आप ) साला पजामे में नहीं समाता है, मारे ख़ुशी के ज़मीन पर पैर ही नहीं टेकता है।

शि०—अरे यार, क्या कहूं ? आज सेठ शोभारामजी की लड़की की शादी की—भाई वल्लाह ! क्या कहूं ?

छ०—फिर भी यार, कुछ कहो तो सही, क्या हुआ ?

शि०—दोस्त, जयपुर से एक मोटे पेटवाले सेठ की बरात आई थी। वह बरातवाला हमें तोरन के वक़्त इन्तज़ाम के लिये बुला ले गया था। अहा, हा, हा !

छ०—फिर ?

शि०—फिर क्या, वहां जो तोरन पर रुपये पैसे फेंके। यार काम बन गया। भाई तीन दिन से रोज़े होरहे थे, भाई भूखों के मारे पेट में चूहे लड़ रहे थे।

छ०—क्यों यार, रुपये पैसे क्यों फेंके ?

शि०—क्यों यह तो नहीं मालूम। यह सेठ लोग ऐसे ही सिटपिटे होते हैं। ऐसे ही मौक़ों पर ज़र लुटाते हैं। वैसे तो यह लोग बड़े कंजूस, मनहूस, मक्खीचूस, छप्पर के फूस, काले आबनूस, एशिया माइनर के घूस, बलखबुखारे के मूस और सन् सत्तावन के कारतूस, लेकिन मियां शादियों में तो आंख पर पट्टी बांध कर लुटाते हैं।

छ०—तुम्हारे क्या हाथ लगा ?

शि०—अरे यार कइयों के तो ज़ेवर तोड़ लिये, कई पिट गये, कई चिथ गये, आतिशबाज़ी से जल गये, हमारे भी दो चार रोज की ख़र्ची हाथ लगी। अहा, हा, हा ! क्या तमाशा हुआ ?

छ०—तमाशा क्या हुआ ?

शि०—अरे मियां, यह सेठ ज़ेवर तो इतना पहिनें कि लखनऊ की बेगमों को भी मात करदें, लेकिन हिफाज़त के लिये एक लकड़ी भी पास न रक्खें।

छ०—तमाशा क्या हुआ ?

शि०—ओ हो, हो, हो ! महतर, चमार, कोली, ढोली सब कोई दोसौ आदमी लूटने को आये थे। किसी का सिर फट गया, कइयों के हाथ टूट गये, कई साले रोते गये। ओ हो, हो, हो ! दूल्हा भी घोड़े पर से अब गिरूं, अब गिरूं हो गया, कई बराती ज़ख्मी हुए, ओ हो, हो, हो !

छ०—अरे मियां, ठहर तो सही भागा क्यों जावे है। नोशा कितना बड़ा था ?

शि०—नोशा ! तैने सुना नहीं ! वह किसी ने कहा है न—

चिरजीओ महाराज मेरा हरियाला बनड़ा ॥
मूंछ कटाय के छोटी करलई, दाढ़ी दई मुंडाय ॥
तन बन्ने के अतलस का बागा, लटक रही सब खाल ॥
कमर बन्ने के गुजराती पटका, चले डगमगी चाल ॥
सर बन्ने के सोने का सेहरा, सर के धोले बाल ॥
मुख बन्ने के पानों का बीड़ा, जैसे ऊंट चबात ॥
क्या छवि बरणूं मैं मुखड़े की, मुख में नहीं एक दांत ॥
मेरा हरियाला बनड़ा ॥

सुबहानअल्लाह ! दूल्हे की कुछ मत पूछ, उमर तो कोई एक कम अस्सी वर्ष की होगी । गर्दन हिलती हुई, रुख़सार बैठे हुए, तमाम चहरे पर झुर्रियां पड़ रहीं थीं, बाल सब सफ़ेद बिलकुल क़बर में पैर लटकाये हुए था । लेकिन मियां शादी करने के लिये महँदी, उबटना, बल्कि काजल तक लगा आया था । डाढ़ी वाढ़ी मुंडवा कर " अपने मन मियां मिट्ठू" अपने तई जवान कहता था ।

छ०—हां, इतना बुड्ढा था, फिर यार लड़की ने इसे कैसे मंजूर किया ।

शि०—मंजूर, मंजूर वंजूर करने की रस्म इन सेठों में नहीं होती है, यह लोग तो झट से लेकर बिला रजामंदी दुलहन का हाथ मिला देते हैं । बिचारी मासूम लड़की ने कहा भी कि यह बुड्ढा मेरे जद्दे अमजद के बराबर है, मैं इससे निकाह नहीं करूंगी । मगर मियां, वहां "नक्क़ारख़ाने में तूती

की आवाज़ कौन सुनता है" बेदर्द पुरोहित ने ज़बर्दस्ती हाथ मिला ही तो दिया और सेठ शोभाराम ने बाहर मकान से निकल कर बाजे वालों से कहा—शादियाने बजाओ शादी होगई है। वल्लाह क्या मकरूह रस्म है।

छ०—तो क्यों मियां, इस क़दर बुड्ढे के साथ शादी किस ग़रज़ से कीगई? अपन जैसा जवान कहीं भी दस्तयाब नहीं होसकता था?

शि०—क्यों नहीं, मियां तुम समझे नहीं, इन लोगों में कुछ अर्से से फ़िज़ूल ख़र्च की रस्में बहुत रिवाज़ पागई हैं और रिज़्को रोज़गार तो जैसा है वैसा तुम जानते ही हो। तो फिर शादी के लिये ज़र आवे कहां से? लिहाज़ा यह मरदूद मनहूस, अपनी मासूम दुख्तर, लख्ते जिगर को किसी मालदार आसामी के हाथ फ़रोख़्त करके क़ीमत का रुपया कुछ तो शादी में लगा देते हैं और बाक़ी को अपने रोज़गार का सरमाया बना लेते हैं।

छ०—अल्लाह! अल्लाह! क्या ही बदरस्म है।

शि०—मियां, यह रस्म एक तरह से तो अच्छी है। अगर हमारे यहां भी यह रस्म होती तो तीन तीन रोज के एक-लख्त फ़ाके तो नहीं पड़ते, दो चार रोज तो बदनामी होती, मगर फिर तो आराम से ज़िन्दगी बसर करते। यह ज़र दुनियां में अल्लाहमियां ने एक अज़ीब शय पैदा की है। इससे सब ऐब छिप जाते हैं। सब हाजतें रफ़ा हो जाती हैं। मसल मशहूर है—

"ऐ ज़र तू ख़ुदा नई, वले बख़ुदा, सत्तारुल अयूबो काज़ीउल हाजाती"।

छ०—मगर भाई, भेड़ बकरी की तरह अपनी लड़कियों को बेचना और, और फिर भी अपने को "अशरफुल मख़लूक़ात" कहना, यह बात कैसी ?

शि०—यह ही तो सबब है कि हिन्दुस्तान, जो किसी ज़माने में जन्नत-निशान था, अब ऐसी ख़राब ख़स्ता हालत में पड़ गया है।

( जाते हैं )

## चतुर्थ अङ्क, दृश्य ५.

( *प्रवेश शोभाराम और घमंडीलाल* )

घमण्डीलाल–शोभारामजी, बरात तो विदा हो गई अब हिसाब कर रुपया दे दो।

शोभाराम–भाई घमण्डीलालजी पावणां नै सीख दे लेबा द्यो, परसूं हिसाब कर रुपया लेजाजो।

घ०–परसूं, अजी परसूं कुणनै आवै, म्हारी तो धनपतरायजी आज ही जान खावै हा। ब्याज पछै देदीजो असली तीन हज़ार तो देद्यो, ख़ैर फेर आस्यूं। ( जाता है )

( *प्रवेश गणेश हलवाई* )

गणेश–शोभारामजी, बीस मण खांड और पन्द्रह मन बूरो म्हांको आयो सो दाम दिराओ और मिठाई बणाबा की मजूरी भी बक़साओ।

शोभा०–भाई गणेशजी, हिसाब देखकर दाम देस्यां, काल परसूं आजाज्यो।

गणेश०–आछो। ( जाता है )

( *प्रवेश इलाही कूंजड़ा* )

इलाही–सेठजी, तरकारी का दाम चाहिजे। छै मण आलू, पांच मन रतालू तो पहली आया हा और थोड़ा काल आया हा।

शोभा०–तरकारी का रुपया तो मैं जद ही भेज दिया हा, कठै गयो नन्दो बिरामण, आ काई गड़बड़ कर दी ? आछो इलाही मियां, शामका आज्यो। ( जाता है )

इलाही-देखो मुएं की बात ! अभी तक एक कौड़ी भी नहीं दी है और कहता है रुपये तो भेजदिये।

शोभा०-देखो धनदास, रसोई में काई देरी है ?

धनदास-रसोई कठा सूं होय ! रांड मिश्राणी ही नहीं आई। वा तो कहवै है कि मनै कुछ मिल्यो ही कोनी।

शोभा०-जा तो मिश्राणी जठे होय उठा सूं ल्या। नाई कुम्हार नै भी बुलातो आजे। कमीणां की जितरी खुशामद करो, उत्ता ही माथा पर चढै है। सब का सब महीना भर स्यूं रोट्यां खा रह्या है। काम करती वक्त मौत आवै है।

धन०-यह आया साहब, सब का सब।

शोभा०-क्योंरे, कमीणां इतरो घमण्ड ! चार आदमी जा चुक्या है अबतक सूरत ही नहीं दिखाई।

नाई, कुम्हार-सूरत काई दिखावां ? कुछ कहवा की हो तो कहवां। तीन महीना सूं सब का सब आपकी टहल में लाग रह्या हां और क्यों ही ख़ाक भी नहीं मिली, काम तो आपकै करां, पेट कठै लेजावां ?

शोभा०-जावो अबार तो काम करो, पछै देखी जासी। थे घर का आदमी होकर ऐ बातां करो काई ?

( नैपथ्य में )

रुपया मिलै न जवाब मिलै, अब भी जाणै घर में हैं कि नहीं, शोभारामजी है काई ?

शोभा०-कुण है भाई, अठीनै आजाज्यो।

गणपत-घमंडीलालजी की चिट्ठी है, आज रुपया भेज

थो । ब्याह होतां ही देवा की कही ही सो अबतक नहीं दिया। पंदरा दिन में रुपया पहुंचा थो नहीं तो नालिश कर देसी।

शोभा०—गणपतरायजी, सेठजी नै हाथ जोड़ कह दीज्यो म्हांनै दो महीना और निभावै, मैं फिकर में लाग रह्यो हूँ। सब सूं पहली वणां नै रुपया देस्यूं।

गण०—आप कहो सो तो मैं कह देस्यूं, परंतु अब सेठजी मानैला नहीं, वणां नै कोई जाकर कह दियो है कि—जो माल, असबाब, जायदाद ही सो तो आप दूसरा क़रज़ वालां ने दे दीनी, थे क्यों ढीला बैठा हो। ई वास्तै वह मनै तीन दफै तो भेज चुक्या है।

शोभा०—भाई साहब, लोग तो म्हारी इज्ज़त बिगाड़बा में फिरै है, आप कह दीज्यो म्हारा बैर्यां का कह्या पर ख़याल न करे। हाल ताईं कीनैहीं कौड़ी नहीं दीनी है। कोई हलवाई, पंसारी नै दो, तीन, चीज़ां निकम्मी पड़ी ही सो बेचकर निपटाया है, सिर्फ एक पुरानी गाड़ी दो एक रथ और बैल बेच्या है और दो मकान और एक दूकान जो ब्याह सूं पहिली गिरवे रखदी ही सो बेची है।

( नैपथ्य में )

कोई अन्दर है? अरे भाई कोई अन्दर है?

शोभा०—( चौंक कर ) कुण होसी भाई! शेखजी कहां से आया?

चपरासी—सेठजी, दीवानी अदालत का सम्मन है। किशनलाल किरपाराम गुलखण्डिये ने तुम पर नालिश

की है। तारीख़ आठ जनवरी की पेशी है। दस्तख़त करदो और सम्मन लेलो।

शोभा०—देखो तो गणपतरायजी, ई अंधेर ने देखो। सब तो रुपया ले चुक्या है और उल्टी नालिश करदी है। आज काल आ ईमानदारी रह गई है। आछ्यो मियां साहब, आप जाओ। ( चपरासी जाता है )

गण०—आछ्यो अब मैं जाऊं ? चिट्ठी को जवाब लिख दीजो, जठा ताणी होसी साद सूद करवा देस्यूं।

शोभा०—आ आप की, राखी की दच्छिणा तो ले पधारो। ( चार आने देता है ) जठा ताणी हो, हाल आगैं गुड़ाड्यो।

( गणपत जाता है )

शोभा०—लेनदार नित घर पर आवें,
करज़ मांग दिक़ कर डालें।
किया फिज़ूल ख़र्च, तो करज़दार बना।
फिज़ूल ख़र्च आख़िर, वह गले का हार बना॥

हा ! भो ब्याह तो मनै कीं हीं लायक नहीं राख्यो, पास पईस्यो नहीं, क़रज़दार मनाया मानै नहीं, घरबार बेचबा सें भी पूरो नहीं पड़ सकै, लोगां का बहकावा में आकर मालमत्तो सब खो बैठा हां।

जो जैसी करनी करै, वैसा ही फल होय।
बोये पेड़ बंबूल के, आम कहां ते होय॥

दस पांच दिन में बैठबा नै भी ठौर न रहसी, रिश्तादारां कनै मांगां तो लाज आवै, शायद नट भी जाय।

हा ! राम, काई करूं कठै जाऊं, ओ दुःख तो बुरो लाग्यो। सच कही है:—

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय॥
जगमें होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै।
खान पान सनमान, राग रंग मन नहिं भावै॥
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरै न टारै।
खटकत है दिन रैन, कियो जो बिना विचारै॥

( फटकाबिहारीलाल )

भाई फटकाबिहारीलालजी, अब म्हारी इज़्ज़त आपके हाथ है, कठै ही रुपया को बन्दोवस्त कराय द्यो। शोभा लेबा में आगैं आगैं आप ही हा। अब आ पुराणा मित्र की इज़्ज़त राखबो आप ही के हाथ है।

फटकाबिहारी०—सेठसाहब, मैं काई करूं। म्हारा घरमें काई खाई गड़ी है! मैं तो आप ही आबरू लियां बैठो हूं।

शोभाराम—हाय! हाय! थे भी चाल खेल गया फटकाबिहारीलालजी!

फटक०—अब लोगानै दूषण देबा सूं काई होवे है, पहली आप ही विचार कर ख़र्च करयो होतो। बीं वक़्त तो शोभा शोभा ही में फूल कर कुप्पा हो गया। अब म्हांनै दूषण देवै है। ( जाता है )

शो०-साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
जबलग पैसा गांठ में, तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार, संग संग ही नित डोले।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहिं बोले॥
कहे गिरधर कविराय, जगत में याही लेखा।
करत बेग़रज़ी प्रीति, यार हम बिरला देखा॥

हाय ! ई, फिजूलख़र्ची से तो बाप दादा के नाम पर बट्टो लागतो दीखै है, पंच पंचायती में कीं नेहीं कोई चीज़ नहीं गिणा हा, अब आ जो सारी इज़्ज़त मलयामेट हो गई। हे राम, अच्छा बिगाड्या:—

सुणज्यो नरनारी शोभा में बिगड़्या शोभारामजी॥

हिम्मतमलजी दादा मारा मोटी बात विचारी।
हिम्मत कर कर गया दिशावर जद आई नादारी॥
भटकत देश विदेश भाकरां हिम्मत कबहूं न हारी।
हो हिम्मत अवतारी पुरुषारथधारी, हिम्मतरामजी॥
सुणज्यो० ॥ १ ॥

पूरणमल पूरा व्यौपारी प्रणधारी मम तात।
देश देश में करी दुकाना धन संच्यो दिन रात॥
विद्या पर-उपकार दान में कियो पिता को साथ।
दुरबल दीन अनाथ रचकर कियो वंश विख्यात॥
सुणज्यो० ॥ २ ॥

मैं सोभो शोभा को भूखो शोभा ना बिसराई।
राज अदालत जात न्यात में कबहूं न कची खाई॥

नुगता नारा विवाह आदि में धन की धूल उड़ाई ।
बात अड़ी पर तन मन धन से कबहुं न पीठ दिखाई

सुणज्यो० ॥ ३ ॥

नाती गोती बैण भाणजी सब पइस्यां की लार ।
भाई बंधू जात न्यात में पइस्यां ही की सार ॥
मित्र सनेही हेतू मिमती बह पइस्यां का यार ।
मात पिता सुत पुत्री दारा सब जन दे धिक्कार ॥

सुणज्यो० ॥ ४ ॥

ठावा घर का ठीकरासमे उज्वल मारी जात ।
लाड प्यार में रहा अनाड़ी धंधो कियो न जात ॥
निकमाई में नीची संगत नीच करम दिन रात ।
फिरां जो डावांडोल भटकता करै न कोऊ बात ॥

सुणज्यो० ॥ ५ ॥

हाथां किया काम भाईजी किणनै देवां शाप ।
सहां सकल शोभा के लारे अपकीरत संताप ॥
भाविभूत विचारशून्य हो, लख्यो न पुन अरु पाप ।
सीधे करन चले औरन को सीधे होगये आप ॥

सुणज्यो० ॥ ६ ॥

घर में कलहै करै घर नारी विलख्या डौले बाल ।
जात न्यात का ताना मारै उठै बदन में झाल ॥
सगा सम्बन्धी सब शरमावै देख हमारो हाल ।
कोरी शेखी उजला कपड़ा रहा मूँछ का बाल ॥

सुणज्यो० ॥ ७ ॥

हा ! जैसी हो होतव्यता तैसी उपजै बुद्धि ।
होनहार हिरदै बसै बिसर जात सब शुद्धि ॥ (जाते हैं)

## चतुर्थ अङ्क, दृश्य ६.

( प्रवेश ज्ञानचंद )

ज्ञानचंद—भाई कृपादयालजी, लाला विवेकानंद का जयपुर से पत्र आया है। उन्हों ने लिखा है कि आपका सम्बन्ध हमें स्वीकार है। शुभ मुहूर्त विवाह का मिती पौष शुदी १४ का होगा। बरात में अनुमान पचास सज्जन पधारेंगे, आप प्रबंध आरंभ करदें, हम कररहे हैं। विवाह की सब रीति भांति आपकी इच्छानुसार वैश्यमहासभा के नियमानुसार होगी। अब आप फरमावें किस प्रकार प्रबंध किया जाय?

कृपा०—बहुत ठीक, बरात के उतरने का प्रबंध अपने यहां की अग्रवाल हाईस्कूल के मकान में कर दिया जाय, क्योंकि इन दिनों छुट्टी के कारण स्कूल बंद रहेगा। पांच रसोईदार और दश नौकर उनके प्रबंध के लिये नियत रहें। रसोई चार वक्त वहीं उनकी मरज़ी के मुआफिक़ बनाई जावे और घोड़ागाड़ियां हरदम उनकी तईनाती में रहें और विवाह में भजन इत्यादि के लिये अनाथालय से अनाथ कन्याओं की भजनमण्डली बुलवाली जाय।

ज्ञान०—वास्तव में अपना पहिला कर्त्तव्य तो जो सज्जन पधारें उनकी खातिरख़्वाह तवाज़ो करने का है। उन्हें किसी प्रकार की तक़लीफ़ न हो और पंडित आत्मारामजी महामहोपाध्याय से सम्मति लेकर व्याह हवन आदि की सब सामग्री एकत्र करलें, सब कार्य्य को विभाजित करके निगरानी

के लिये वैश्यसभा से चार नवयुवक उत्साही पुरुष बुलाकर उनको काम संभला दें। आप उनकी काररवाई को देखें और अपनी सुपुर्दगी का भी कार्य्य करें। स्त्रियों के करने के कार्य्यों में अव्वल तो विद्या की माता सब जानती है फिर भी श्रीमान् पंडितानीजी को बुलवा लें।

बुद्धिमती-खाने पीने का सामान तो मैंने सब तैयार कर लिया है, कपड़े भी क़रीब २ सब तय्यार हैं। कल गणेश-पूजा करवा कर गुड़ बांट दिया जायागा। आप हमारी ओर की कुछ चिंता न करें।

ज्ञान०-अति उत्तम।

( सब जाते हैं )



## पञ्चम अङ्क, दृश्य १.

( प्रवेश विद्यावती और बुद्धिसागर )

विद्यावती—हे प्राणनाथ ! अग्नी की साक्षी से वेदोक्त रीति अनुसार और सब कार्य तो हो गया, अब मेरी एक सविनय प्रार्थना है, उसको आप स्वीकार करें ।

वचन दो सात जब हमको, तभी प्रीतम कहाओगे ।
करो इकरार पंचों में, उसे पूरा निभाओगे ॥
पकड़ कर हाथ जो मेरा, मुझे पत्नी बनाई है ।
तो किश्ती उमर की मेरी, किनारे पर लगाओगे ॥
हमारे वस्त्र भोजन की, फिकर करना तुम्हें होगा ।
वचन मन कर्म से प्यारे, मुझे अपनी बनाओगे ॥
विपति सम्पति औ बीमारी, गमी शादी व सुख दुख में ।
कभी किसी हाल में मुझ से, जुदा होने न पाओगे ॥
जवानी और बुढ़ापे में, खिज़ा बहार यौवन में ।
निगाहे मिहर से हरदम, खुशी मुझ को दिलाओगे ॥
तिजारत नौकरी खेती, अर्थ और धर्म्म सम्बन्धी ।
करो कोई काम जब जारी, हमें पहिले जताओगे ।
जो बिगड़े काम कुछ मुझ से, करो एकान्त में शिक्षा ॥
मगर नन्दी सहेलिन में, न तुम हमसे रिसाओगे ।
हमें तजि और तिरिया को, दिया भी दिल तो तुम जानो ॥
किए अपने को पाओगे, जो मेरा जी जलाओगे ॥
अग्नि को साक्षी देकर, जो अर्धाङ्गिन मुझको ।
तो फिर प्यारे हाथ बांए, मुझे अपने बिठाओगे ॥

बुद्धिसागर—हे प्राणप्रिय, बहुत ठीक, आपके वचन मुझे सब प्रकार स्वीकार हैं, परन्तु एक बात मेरी भी आपको स्वीकार करनी होगी।

वचन देता हूं मैं तुझको, तुझे प्यारी बनाऊंगा।
मगर मैं चन्द बातों का, क़ौल तुम से कराऊंगा॥
तुझे मैं धर्म के खातिर, जो अर्धाङ्गिन बनाता हूं।
क़ौल ताउम्र अपने से, न पग पीछे हटाऊंगा॥
मगर तामील हुक्मों पर, मेरे रहना कमरबस्ता।
हुई इस बात में ग़लती, तो फिर नीचा दिखाऊंगा॥
सिवा मेरे जो कोई नर, हो चाहे कितना ही बिहतर।
जो कि कभी ख्वाब में ख्वाहिश, तो दिल तुम से हटाऊंगा
विपति सम्पति में हरदम, हमारे साथ में रहना।
गुज़ारा उसमें ही करना, कि जो कुछ मैं कमाऊंगा॥
दग़ा राखो जो कुछ दिल में, तो अपने दिल की तुम जानो।
मगर मैं धर्म से अपना, वचन पूरा निभाऊंगा॥
वचन सागर के इतने जो, हैं स्वीकार सतचित से।
तो फिर दिलो जां से प्यारी, तेरी ख़िदमत बजाऊंगा॥

विद्यावती—जो आज्ञा प्राणनाथ!

( माता की ओर देख कर )

माताजी! अब मुझे आप आज्ञा प्रदान करें।

लक्ष्मी—हे पुत्री, देख अब तू श्वसुराल जाती है। अपने पति की हरभांति भली प्रकार सत्य चित से सेवा करना। उनकी प्रसन्नता में और उन के दुःख में अपना दुःख मानना। सास, ननद और जेठानी की भी सेवा करना अपना मुख्य धर्म जानना। घर का प्रबन्ध भलीभांति करना। अपने पति

को भोजन कराके करना। बड़े सबेरे उठना, देर से सोना और किसी को कड़ुए वचन न कहना।

मैं समझाऊं अय मेरी लाडी सासू के घर जाना होगा ॥
प्रातकाल उठ प्रभू-भजन कर, सब को शीस नवाना होगा ॥
सास श्वसुर की निशदिन सेवा, सबका हुक्म बजाना होगा ॥
ननद जिठानी से प्रीती रखना, पति ही पूज्य मनाना होगा ॥
देवर जेठ को उत्तर न दीजो, सब का कौल निभाना होगा।
घर के कामों में चतुराई, अच्छे पाक बनाना होगा ॥
अपने पति की सेवा करना, पती ही में प्रेम बढ़ाना होगा ॥
सब कामों से खाली होकर, तन मन विद्या में लाना होगा ॥
दानलक्ष्मी विद्या में देना, सच्चा दान कमाना होगा ॥

विद्यावती–जो आज्ञा माताजी, आज आप से विदा होते बड़ा दुःख होता है, परंतु ऐसा ही होना था। पत्र अवश्य देते रहें, क्योंकि दूर का मिलना पत्र ही से है।

लक्ष्मी–( पुत्री के शिर पर हाथ फेरती हुई ) बेटी, तू अधीर और कातर मत हो, साहस रख।

पतिव्रत धर्म तुम्हार, निभाओ तो सुख पाओ ॥
पति की आज्ञा शिर पर धरना, पितृयज्ञ नित घर में करना।
देवऋषी ऋण चहिये टरना, अतिथि पूज हर बार ॥
प्रातकाल स्नान कराना, संध्या हवन में मदद दिलाना।
पीछे सुन्दर पाक बनाना, दिनचर्या अनुसार ॥
सदा बोलना मीठी वानी, प्रेम भक्ति पूजा की खानी।

विनयशील से वस्तु मंगानी, जो चहिये घर बार ॥
दूर देश से जब आवें वह री, करो प्रणाम दोउ कर जोरी।
कुशल पूछना मार्ग बहोरी कैसे रहे भरतार ॥
मित्र समझकर नित हित करना हैं तो बराबर अधिक समझना।
बाई इसका ध्यान ही रखना, जो मन सुफल तुम्हार ॥

विद्यावती–जो आज्ञा माताजी !

( पिता की ओर हाथ जोड़कर )

पिताजी, आज्ञा प्रदान करें।

ज्ञान०–अच्छा बाई कुशल, क्षेम से जाना। तेरी माता ने जो कुछ कहा है उस का ध्यान रखना। ईश्वर तेरा सुहाग अटल करे। ( सब जाते हैं )

## पंचम अङ्क, दृश्य २.

( प्रवेश विचारक और चौधरी पंचमल )

विचारक–आपने सुना लाला ज्ञानचन्दजी की पुत्री विद्यावती का विवाह बड़े समारोह के साथ होगया। विवाह का प्रबन्ध क्या ही उत्तम था। बरात वाले बड़ी प्रशंसा करते थे। विवाह की सर्व रीतियां वैश्यमहासभा के नियमानुसार कीगई, सीठने और गालियों की ठौर उत्तम उत्तम भजन किये गये। सम्बन्धियों के परस्पर अत्यन्त प्रेम रहा। बड़ा ही आनन्द आया।

पंचमल–काई आनन्द आयो ? रंडी को नाच महफिल वग़ैरह तो काई हुई ही कोनी, रंडी बिना ब्याह ही काई ?

विचा०-नहीं नहीं, विवाह जैसे मंगल कार्य में रंडी का नचाना उचित नहीं। देखो इस रंडी के नचाने से बड़ी २ हानियां हैं–इनकी तादाद बढ़ने से व्यभिचार बढ़ता है। सन्तान बिगड़ जाती है। जो रुपया इनको विवाह आदि में दिया जाता है उसीसे यह गृहस्थियों की कन्याओं को ख़रीदती हैं वरना इतनी आती कहां से हैं ? रंडियों की कोई खान तो है ही नहीं। सुनिये:—

विवाह आदि संस्कारों में वेश्या बुला नचाते हैं।
धर्म कर्म जो नष्ट करें उसे मंगलामुखी बताते हैं॥
सन्तानों को सजा सजा कर महफिल में लेजाते हैं।
गोया बनकर गुरू आप उनको व्यभिचार सिखाते हैं॥

बच्चों के हाथ से द्रव्य वह रंडी को दिलवाते हैं ।
दान पुण्य में देते न कौड़ी वैसे ही लाख लुटाते हैं ॥
रंडी का सुनने को राग वह बड़ी खुशी से आते हैं ।
कहे मुरारीलाल धर्म वाणी से मुंह दुबकाते हैं ॥

और सुनिये—

धन हमारे देश का बदकार लाखों खा रहे ।
भांड वेश्या मुफ्तखोरे बैठे मौज उड़ा रहे ॥
है तुम्हें धिक्कार विधवा दीन रो चिल्ला रहे ।
कूचकू कितने ही अंध लूले धक्का खा रहे ॥

पंच०-( आपही आप ) इसी कुण सुणै है ( प्रगट ) आतो ठीक; रंडी का नचाबासूं सरासर नुकसान है, परन्तु एक बाततो समझ में कोनी आई ? विद्यावती फेरा की वक़त "उगाड़े मूंड" आपका बींद कै सामने श्लोक बोल रही ही, सो आतो ठीक नहीं, लाज शरम तो राखनी चाहिजे ।

विद्या०-नहीं सेठसाहब, यह तो अपने शास्त्र की बात है, पहिले परदा नहीं था, देखो सीताजी ने स्वयंवर के वक़्त सब राजाओं की उपस्थिति में श्रीरामचन्द्रजी को वरमाला पहनाई । रही श्लोक बोलने की सो यह बात है कि अपने लड़के लड़की पढ़े लिखे नहीं होते, इसलिये उनके बोलने के श्लोक भी पण्डित सब आपही आप बोल लेता है, अगर दूल्हा दुल्हन नहीं बोलें तो फिर शास्त्रकारों ने इनके बोलने के लिये श्लोक क्यों बनाये ?

पंच०-आछो आतो मानी, परन्तु ज्ञानचन्दजी इशा बड़ा आदमी होकर बरात तो बहुत थोड़ी मंगाई और खर्च भी बहुत थोड़ो कर्यो, इसी कंजूसी काई काम की। अगर व्याह वगैरह में ही रुपया दिल खोलकर न लगावां तो फिर कमाई करां कीं वास्तै हां ?

विचा०-भाईसाहब, बरात तो बड़ी मंगवाते परन्तु यदि प्रबन्ध अच्छा न होता तो फिर क्या मजा रहता, छोटी बरात का प्रबन्ध सुभीते से हो सकता है, न लड़के वाले को तकलीफ होती है न लड़की वाले को। रही खर्च की सो आवश्यक खर्च तो सब किया ही गया। केवल फिजूलखर्ची नहीं की सो आप विचार करो। अगर सेठ शोभारामजी की तरह लड़की पर लेकर या जायदाद बेचकर या उधार लेकर रुपया लगाते तो कल आप ही बुरा कहते। सुनिये—

## फिजूलखर्ची से क्या क्या हानियां हैं।

दबाये ऐसे कि सत निचोड़ा, फिजूलखर्ची तेरा बुरा हो।
सताये ऐसे कि कुछ न छोड़ा फिजूलखर्ची तेरा बुरा हो॥ १॥
जमे जमाये अखाड़े तूने, बसे बसाये उजाड़े तूने।
सजाये अपने उखाड़े तूने, फिजूलखर्ची तेरा बुरा हो॥ २॥
जिसे कि काटा उसे सुलाया, न उसने सर को जरा उठाया।
न उसका मंतर भी काम आया, फिजूलखर्ची तेरा बुरा हो॥ ३॥
तूं वह बला है कि काट खाये, तूं वह बला है कि चाट जाये।
न तेरे काटे को चैन आये, फिजूल०॥ ४॥
किसी को जूये में जा लगाया, किसी को चोरी का फन सिखाया।
किसी को झूठा ही जा बनाया, फिजूल०॥ ५॥

जहां पड़ा है क़दम तुम्हारा, गया वहां से है ऐश सारा ।
रहा न कोई किसी का प्यारा, फ़िज़ूल० ॥ ६ ॥
बुरी आदतों का बीज बोया, मिली जिसे तू उसे डुबोया ।
है दम के दम में जहां से खोया, फ़िज़ूल० ॥ ७ ॥
बुराइयों की तूं ही है खाला, किया है बहुतों का इक निवाला ।
दिवाला बहुतों का है निकाला, फ़िज़ूल० ॥ ८ ॥
तूं भाई से भाई जा भिड़ा दे, तूं बाप बेटे को घर लड़ा दे ।
तूं सर पै दुश्मन को जा चढ़ा दे, फ़िज़ूल० ॥ ९ ॥
बिगाड़े तूंने वह खानदानी, कि जिनकी इज़्ज़त बड़ों ने मानी ।
न मिलती ढूंढे है अब निशानी, फ़िज़ूल० ॥ १० ॥

इस तरह की फ़िज़ूलख़र्ची से रुपया बचाकर आप अपने बच्चों की तालीम वग़ैरह में ख़र्च करो । अपने मारवाड़ी भाई न तो अच्छा खाते, पीते पहनते न अपने बच्चों की तालीम में कुछ ख़र्च करते । केवल न्यात कर करके अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर रहे हैं ।

पंचमल–हां, बात तो सांची है । लड़कयां पर रुपयो लेबो तो ख़राब ही है, अब आप देखो शोभारामजी की कांई इज़्ज़त थोड़ी ही रही ।

विचारक–उनको देख कर भी तो लोग न मानें । ज़रा भी तो नहीं सोचें कि यह कन्या का बेचना कैसा महापाप है ।

हाय ! हुए कैसे मा बाप पुत्री बेच कर खावें ॥
भेड़ बकरी की नाईं, बेचै हैं उन्हें अन्यायी ।
नक़द लेलैं चुपचाप ॥ पुत्री० ॥ १ ॥

कोई तीन हज़ार लगावें, कोई बदले ब्याह करावें।
हाय कैसा है पाप ॥ पुत्री० ॥ २ ॥

बच्चे बुढ्ढों से ब्याहैं, उन्हें करके रांड बिठावैं।
करैं नहीं पश्चाताप ॥ पुत्री० ॥ ३ ॥

ऐ पुत्री बेचने वालो, अब ज़ुल्म से हाथ उठा लो।
शर्म से लो मुंह ढांप ॥ पुत्री० ॥ ४ ॥

मिहनत से टका कमाओ, मत पुत्री बेचकर खाओ।
बनो न पापी आप ॥ पुत्री० ॥ ५ ॥

कहैं विचारक तुम्हें पुकारी, तुम मानों बात हमारी।
जो हो सच्चे मा बाप ॥ पुत्री बेचकर खावें ॥ ६ ॥

पंचमल-हां, ई बात ने तो सब ही बुरी केवै है। ज्ञानचन्दजी के ब्याह तो चोखो हुयो, परन्तु गाली गीत तो कीं हुयो ही कोनी। आप जाणो हो गाली गीत बिना ब्याह ही सब फीको है।

विचारक-नहीं गीत तो सब कुछ हुया, हां सिर्फ गाली और सीठने नहीं गाये सो ज़रा आप विचार करो। अपने बड़े बड़े घरों की स्त्रियां अपने रूबरू बेशर्मी से कुफार और कुवाक्य बकें तो क्या अच्छा है? और अगर ब्याह जैसे शुभ कार्य में गाली गलोच के एवज़ उत्तम उत्तम भजन हों तो क्या कोई बुराई है?

पंचमल-हां, आ बात तो ठीक है, परन्तु प्राचीन बाप दादों की चलाई हुई गीतां ने तोड़बो आछो नहीं। चाहे वह चोखी हो चाहे खोटी।

विचा०—सत्य को ग्रहण करना और असत्य को त्यागना वैश्य जाति का परमधर्म है। अच्छी रीति पर चलना और बुरी को छोड़ना यही बाप दादों का कहना है। इस ही को मानना चाहिये।

सुनो तो—

सब देश अति उद्योगशाली, हो रहा हम सो रहे।
सब देश जोड़ें ज्ञान धन, कर यत्न हम सब खो रहे॥
हे बन्धु! अब तो चेतिये, तुम देख जागृति देश की।
द्यो त्याग आदत रोश की, बुनियाद जड़ सब क्लेश की॥
है मारवाड़ समाज दूषित, रीति झोड़ों से दुखी।
तुम रीति निंदित मेट कर, कर दो इसको अब तो सुखी॥
हे मारवाड़ी भाइयो! क्या ही सलूना है समा।
कर लो सुधारा उन्नती, साधन हुए हैं सब जमा॥

## पञ्चम अङ्क, दृश्य ३.

सेठ धनीराम सख़्त बीमार पड़े हैं और रिश्तेदार आसपास बैठे हैं।

( प्रवेश डाक्टर )

डाक्टर–तुम लोग सब अलग हट जाओ, हवा छोड़ो, बीमार को चारों तरफ़ से क्यों घेर रक्खा है। ( देखता है )

ओ! यह तो बहुत सख़्त बीमार है, अब हम क्या कर सकता है, तुम लोग जब बीमार के बचने की बिलकुल उम्मीद नहीं रहती तब हमको दिक़ करते हो, अब हम क्या कर सक्ता है। बनिया जाति ही ऐसी है। जीते हुओं की तुम कुछ परवाह नहीं करते, मगर मरे पीछे लम्बी २ आवाज़ें देकर रोते हो और खूब ज़ियाफ़तें उड़ाते हो। अच्छा किसी आदमी को हमारे साथ शफ़ाख़ाने भेजो हम दवाई देगा, लेकिन हम को कुछ उम्मीद नहीं पड़ती कि बुड्ढा जी उठे। ( जाता है )

रूपवती–सरताज मेरे स्वामी, मेरे प्राण से प्यारे।
बेवक़्त कहां जाते हो, क्यों हाय सिधारे॥
छोड़ते हो मुझे आप, अब किसके सहारे।
इन्साफ़ से कहना, थे यही क़ौल तुम्हारे॥
सोचो तो कोई ऐसी, कभी करता है जल्दी।
जिस तरह से, ऐ प्राणप्रिय आप ने अब की॥
कंगन है उधर ताज़ा, इधर ताज़ी है मेंहदी।
चूंदड़ की सुरखी भी, ज़रासी नहीं बदली॥
सेवरे भी अभी सर के मुरझाये नहीं हैं।
चूड़े के रोग़न में, फरक़ आये नहीं हैं॥

बेज़ार मेरी शकल से होगा सारा घराना ।
वैरी होगा ऐ प्यारे मेरा सारा ज़माना ॥
बेकस हूं, बेबस हूं, लाचार हुई हूं ।
सच कहती हू जीने से बेज़ार हुई हूं ॥
मनहूस कोई कहेगा और कोई अभागिन ।
कहेगा कोई क्योंन मरी होते ही डाइन ॥
हे प्राणपती यूं मुझे ताने न दिलाना ।
मुझ दुखिया पै न इस दुनियां को हँसाना ॥
देखो तो न जली हुई को और जलाना ।
लेचलो मुझे साथ जहां आप को जाना ॥

नोट—इतने में धनीराम का देहांत हो जाता है परदा गिरता है । और रूपवती आगे निकल आती है ॥

हा ईश ! हाय ! हाय ! यह क्या हुआ !

हा ! राम मेरी सम्पति लूट लईरे, हाय मैं अबला रांड भई रे ॥
राम मोयँ भारी विपति पड़ी रे, मैं जीवत हाय मरी रे ॥
राम मैं कैसे धीर धरूंगी, हाय विष खाके घात करूंगी ॥
राम अब आठ साठ कस पाऊं, हाय मैं कैसे जन्म बिताऊं ॥
राम निरच्छक को क्यों मारी, करै को हाय सहाय हमारी ॥

हा ईश ! अब इस असीम दुःखसागर से कैसे पार उतरूंगी, अभी तो मेरे दूध के दांत भी नहीं गिरे हैं। हे देव, मुझ आठ को साठ कब आवेंगे । हा दई ! इस प्रकार निर्दई होकर मेरी सर्वसम्पति को धूल में मिलादिया । हा ! जब मैं युवा होऊंगी मेरी सहेलियां प्रेमरस पीवेंगी और मैं

दुखिया विरह की आग में जलूंगी । अरे यह सर्व धन धान्य अब मेरे किस काम का । अब मेरे लिये सब फीका है ।

( प्रवेश विद्यावती )

विद्यावती–अरी वहिन, तूं आज इस प्रकार क्यों विलाप कर रही है. तेरे घर में ईश्वरेच्छा से इतना धन है । दास दासी हैं । घोड़े हाथी सवारियां और अनेक प्रकार की ऐश इशरत की सामग्री उपस्थित है । यह क्या बात है कि तूं अपने सुन्दर केशों को बिखेरे हुये है । अपनी अशक्त छाती में शील के तीरों का प्रहार कर रही है । तुझे अपने पराये की कुछ भी सुधि नहीं है ।

रूपवती– हा वहिन, जो मुझ पर विपता बीती है वह केवल मैं ही जानती हूं, कुछ कहने की न सुनने की ।

विद्या०–बहिन, बतला तो सही तुझपर ऐसी क्या विपता बीती है, क्या तेरे धनको कोई चोर चुरा लेगया, क्या तेरे कुटुम्ब पर अनहोती हो गई, क्या तेरे प्रिय माता पिता रोगग्रसित हो गये ?

रूप०–हा क्या कहूं, वह महापापी, जिसने साठ बरस की अवस्था में मुझ आठ वर्ष की अबला को खरीदी थी और विलाप करती हुई माता की गोद से जबरदस्ती छीन लाया था, आज इस संसार से कूंच कर गया । हा बहिन, मैं अभागिन अब अपनी आयु को रोरो कर क्योंकर दिन बिताऊंगी ।

हा ईश ! हम भारत अबलाओं पर तूं इस प्रकार क्यों क्रुद्ध है। हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा जो दो करोड़ अबलाओं को अनाथ कर डाला।

विद्या०—यह सुनकर तो मेरा भी हृदय फटा जाता है, छाती उमड़ी आती है। हा बहिन, इस दुःख के कर्ता तेरे हत्यारे मा बाप और यह महापापी वृद्ध तेरा पती ही है। बहिन घबराय मत। देख कहा है:—

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की सांस से, सार भस्म होजाय॥

दूसरों को दुःख में डालने वाला स्वयं दुखी हो जाता है।

"खाड खने जो और को वाको कूप तयार"॥

यह पुरुषों का हम अबलाओं पर बड़ा अन्याय है। परन्तु वे भी इस अन्याय के बदले महाकष्ट भोग रहे हैं।

पहिले तो यवनों के द्वारा इनकी खूब खबर ली गई। सहस्रों को धर्म छोड़ना पड़ा, लाखों को अपनी जानें देनी पड़ीं और करोड़ों को कारागृह में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ा। अब भी यह सर्वथा अशक्त होकर घर का प्रबंध दूसरों के हवाले कर चुके हैं। दिन २ दरिद्री, निर्बल और बुद्धिहीन होते जाते हैं, यहांतक कि वह दिन बहुत दूर नहीं है जब पाताल लोग के निवासियों की तरह संसार से नेस्त-नाबूद हो जायँगे।

रूप०—हा बहिन, इन पापियों का कैसे भला होगा? यह वर देखते हैं न कुटुम्ब, परन्तु रुपयों की थैलियां देखकर

मोहित हो जाते हैं और सरे बाज़ार भाव लगाकर अपनी प्यारी सन्तान को बेच डालते हैं । हा बहिन, इनका क्योंकर भला होगा ?

विद्या०—प्रिय बहिन ! यह वही देश है जहां किसी समय स्त्रियों का बड़ा आदर होता था । वास्तव में अर्धांगिनी मानी जाती थीं । उनको शिक्षा देकर चतुर और बुद्धिमान् करते थे । जहां गार्गी, मैत्रेयी और लीलावती जैसी विद्वान् स्त्रियां देश का भूषण मानी जाती थीं, हा ! अब उसी देश में स्त्रियों का ऐसा निरादर है कि प्रायः पशु समान मानी जाती हैं । हे बहिन, तू अब धीरज धर, संसार में तुझ से भी बहुत मनुष्य अधिक दुखी हैं, उनके दुःख को देख और अपना दुःख बिसार ।

सुनकर दुखिजन की कथा, अपनी विपति बिसार ।
दुख के दिवस गुज़ार दे, धीरज उर में धार ॥

रूप०—हा ! क्या धीरज धरूं ?

विनय सुनलो बुज़ुर्गो ! तुम हमारी ।
करोड़ों रोरहीं हम बेवा बिचारी ॥
गुनाह हमने करी है क्या तुम बताओ ?
मिला एवज़ में जिसके यह दुःख भारी ॥
तुम्हीं ने तो हमें बचपन में ब्याहा ।
तुम्हीं ने शास्त्र की आज्ञा है टारी ॥
मनु और शास्त्र में क्या क्या बताया ।
रहें स्त्रीपुरुष सब ब्रह्मचारी ॥

विद्या०—अरी वैश्य क़ौम, देख तो यह क्या ज़ुल्म होगया, हा ! हा !

आई है अजब जहलो जिहालत के यह वश में ।
मनमानी बना रक्खी हैं इस क़ौम ने रस्में ॥
ऐ भारतीयो ! हा ! यह अंधेर नहीं है ?
औलाद पै भी ज़ुल्म सुना तुम ने कहीं है ?
यह याद रहे आपको जीते ही मरोगे ।
बच्चों की शादी में जो ताजील करोगे ॥
ऐ क़ौम के बुज़ुर्गो ! सितम की कोई हद है ।
कुछ करके दिखाओ कि यही वक़्त मदद है ॥

*ऐ पत्रेवाले पंडितो ! सुनना—*

बूढ़े का लगन कराकर व्याह कराया ।
इस अबला को बस तुमने ही राँड बनाया ॥
मा बापों को इसके पूरा द्रव्य दिलाया ।
और दलाली में तुमने धन खूब उड़ाया ॥
पर याद रहे करते हो जो हीले व बहाने ।
किश्ती नहीं लगेगी कभी तुम्हारी ठिकाने ॥
हे ब्राह्मणो ! कर जोड़ के कुछ प्रार्थना है आप से ।
बकवाद अब तो छोड़ दो यह याचना है आप से ॥
थी क्या दशा पहिले तुम्हारी और अब क्या हो गई ।
सोचो ज़रा कैसे तुम्हारी पूर्वकीरति खोगई ॥ १ ॥

दृग खोल कर देखो तुम्हारी जाति सब से हीन है।
वह आत्मबल से हीन भिक्षावृत्ति में लवलीन है॥
अब पूर्व जैसा तेज तप दिखता नहीं तुम में ज़रा।
जो जाति सब से श्रेष्ठ थी दुष्कर्म में है तत्परा॥ २॥
निज कर्म का तो आप को अब तक ज़रा नहिं ध्यान है।
कन्यादलाली का तुम्हें बेशक बड़ा अभिमान है॥
पूर्वज तुम्हारे आत्मबल से काम करते थे विचित्र।
टुक गौर से देखो तुम्हारे आज कैसे हैं चरित्र॥ ३॥
जो सत्यवक्ता धर्मरक्षक नाम से जाने गये।
संसार में गुरुभाव से जो सर्वदा माने गये॥
हैं आज उनके नाम भिस्ती खर बवर्ची पीर हा!
इस दुर्दशा को देख कर कैसे धरें हम धीर हा॥ ४॥
इस दुर्गती का हेतु तो वेदाध्ययन का लोप है।
वेदाध्ययन के लोप से ही विश्वपति का कोप है॥
सब जातियां अब जग उठीं तुम नींद में क्यों सो रहे।
कुछ कर दिखाओ आप भी जीवन वृथा क्यों खो रहे॥ ५॥
हे ब्राह्मणो! फिर पूर्वजों के तुल्य तुम ज्ञानी बनो!
भूलो न अनुपम आत्मगौरव, धर्म्म के ध्यानी बनो॥
कर दो चकित फिर विश्व को अपने पवित्र प्रकाश से।
मिटजाय फिर सब तम तुम्हारे देश के आकाश से॥ ६॥

बुद्धि०—हे प्रिये, आज मैंने एक भजनमण्डली को बुलवाया है और वह अब आनेवाली है।

विद्या०—बहुत अच्छा, पधारिये जबतक बगीचे में चलें।

( जाते हैं )

## पञ्चम अङ्क, दृश्य ४.

( प्रवेश बुद्धिसार और विद्यावती )

**सायंकाल के समय अपने बगीचे में टहल रहे हैं।**

बुद्धि०—हे प्राणप्रिय, यह सायंकाल का समय कैसा सुन्दर और सुहावना जान पड़ता है, सहस्त्ररश्मी सूर्य्य अपनी तीव्र किरणों को संकोचित करके धीरे धीरे अस्ताचल पर गमन कर रहा है। यह कैसा रमणीय कुंज है। सायंकाल की मंद मंद पवन के प्रभाव से चित्त कैसा प्रसन्न हो रहा है।

विद्या०—वास्तव में, और हे प्राणपति देखो तो पक्षी मधुर स्वर से कैसा कोलाहल कर रहे हैं। अपने अपने घोंसले की खोज में कलकलावट मचा रक्खा है और बीच बीच में शीतल मंद, सुगन्ध पवनदेव ने अपने सुखकर स्पर्श से पृथिवी को अत्यन्त आनन्दित बना दिया है। देखो चन्द्रमा भी अपनी पूर्णिमा के पूर्ण प्रकाश से मनुष्यों के हर्ष की वृद्धि कर रहा है। क्या ही रमणीय स्थान और समय है।

बुद्धि०—हे प्राणप्रिय, आपका यह प्रफुल्ल मुखकमल देखकर आज मुझे राजकुमारी जनकनन्दनी सीताजी की याद आती है, बनवास में वह नवयौवना, प्रेमपूर्ति शशिमुखी अपने मधुर और प्रेमपूरित वचनों से श्री रामचन्द्रजी का मन-संताप दूरकर उनको प्रसन्न करती थी, पति को नित्य सुखानंद की प्राप्ति कराती थी। उसके इस पत्नीधर्म का मुझे इस समय स्मरण होता है। श्रीजानकीजी के सदृश आप भी

आज मुझको आनन्दगिरि के शिखर पर लिये बैठी हैं। आप सरीखी सुलक्षणा पतिव्रता भार्या मुझे प्राप्त हुई है, सो यह मैं बड़े ही पुण्य का फल समझता हूं। आप के इस सुखकर समागम में मेरी आयु कितने आनन्द के साथ व्यतीत होती है, सो वर्णन नहीं हो सकता।

" स्वर्गसुख, स्वर्गसुख " इस प्रकार लोग कहा करते हैं, परन्तु इससे और अधिक क्या स्वर्गसुख होगा। मेरी बुद्धि अनुसार तो यह संसार ही स्वर्ग और नर्क है। गृहस्थाश्रम का सुख ही स्वर्गसुख है।

विद्या०—प्राणनाथ, मैं किस योग्य हूं।

बुद्धि०—नहीं नहीं, गृहस्थाश्रम ही नहीं, किन्तु जन्मभर का आनन्द और क्लेश स्त्रियों पर ही निर्भर है। अच्छी विद्वान् समझदार स्त्री मिलना ईश्वर ही की अत्यन्त अनुग्रह और कृपा का फल है।

विद्या०—जयकुमार के पिता बहुधा मनुष्य-संसार को असार और दुःखसागर बतलाते हैं इसका क्या कारण है? हमारी इतनी उमर तो बड़े ही आनन्द से व्यतीत हुई और भविष्यं में भी कोई दुःख के चिन्ह नहीं दीख पड़ते।

बुद्धि०—ईश्वर ने विद्यारूपी रत्न मनुष्य को ऐसा दिया है कि इसके आगे दुःखरूपी अंधकार का नाश हो सदा आनंद ही आनंद रहता है। कहा है:—

विद्या ही से मिटत हैं, सब क्लेश और विकार।
लोक और परलोक में, सब सुख यह निर्धार॥

## ( प्रवेश भजनमंडली )

उठो मित्रो, पढ़ो विद्या, यही शिक्षा हमारी है।
विना विद्या के पढ़ने से, गिरी हालत तुम्हारी है॥
तुम्हारा मान अरु इज़्ज़त, नहीं अब कुछ रहा बाक़ी।
सबब इसका यही केवल, कि अविद्या तुमको प्यारी है॥
तजो अब मूर्खता मित्रो, पढ़ो फिर पूर्ववत विद्या।
पढ़ाओ अपनी संतति को, यही उपदेश भारी है॥
निकालो शिल्पविद्यायें, फैलाओ देश भारत में।
करो व्यापार फिर भाई, यही एक काम भारी है॥
सुधारक बन उठो अवतो, मिटाओ सब कुरीतों को।
करो कुछ देश की सेवा, यही विनती हमारी है॥

( ड्रापसीन )

